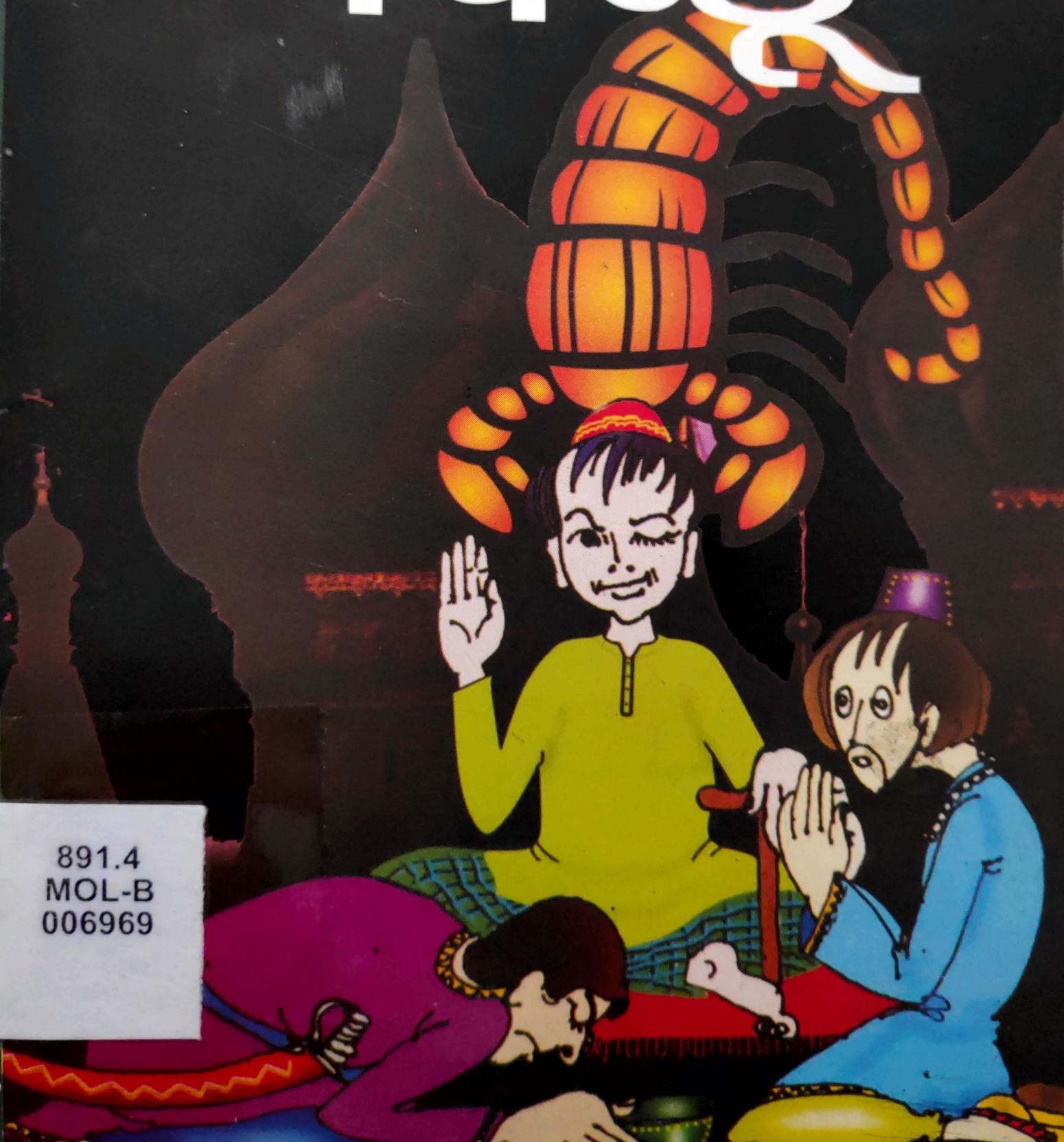


मौलियर

# विटेग



891.4  
MOL-B  
006969

# पहला अंक

(मुनीर और हशमत दाखिल होते हैं।)

मुनीर : (घबराया हुआ) हशमत, हशमत! अब क्या होगा? ओह, यह हशमत भी न जाने कहाँ जाकर गायब हो गया। मठलियाँ मार रहा होगा और क्या। वो रहा, रे हशमत, बेमौत मारे गए। यह ख़त एक हफ़्ते से आया हुआ पड़ा है, और मैंने आज ही खोलकर देखा है। तुझे शायद यह पता नहीं, लेकिन मेरे अब्बाजान घर वापस तशरीफ़ ला रहे हैं।

हशमत : बिल्कुल।

मुनीर : तो तुझे पता है?

हशमत : बिल्कुल।

मुनीर : शायद चचाजान ने तुझे यह बताया होगा।

हशमत : बिल्कुल।

मुनीर : मालूम हुआ है कि उनकी तशरीफ़ लाने का सबब यह है कि उन्होंने मेरे लिए एक बीवी तलाश कर ली है।

हशमत : बिल्कुल।

मुनीर : और वह लड़की नवाब बन्ने मियाँ की है।

हशमत : बिल्कुल।

मुनीर : और वह जहाज़ के जरिए यहाँ के लिए रवाना भी हो चुकी है।

हशमत : बिल्कुल।

- मुनीर : अब खैर नहीं, क्योंकि अब शायद चचाजान को हमारी तमाम हरकतों का इल्म हो चुका है।
- हशमत : बिल्कुल।
- मुनीर : लाहौलविलाकूवत। पूरी बात क्यों नहीं कहता? बिल्कुल, बिल्कुल किए जा रहा है।
- हशमत : अब और ज्यादा कहने की गुंजाइश ही क्या है? जो कुछ आपने बयान किया बिल्कुल ठीक है। एक एक बात तो कह दी आपने।
- मुनीर : तो फिर कोई तरकीब बताओ इस मुसीबत से बचने की। खोपड़ी चकरा कर रह गई। खोपड़ी में नहीं आता क्या करूँ।
- हशमत : मैं खुद अपनी आँखों के सामने अपनी शामत देख रहा हूँ। अब आप ही कोई तरीका निकालिए बचने का।
- मुनीर : उनके यूँ यकायक आ जाने से मेरा सारा मामला चौपट होकर रह गया।
- हशमत : मेरा भी।
- मुनीर : लेकिन अब क्या होगा? वो सोचो। करूँ तो क्या करूँ? कहीं से कोई रौशनी नहीं।  
(रहमत दाखिल होता है)
- रहमत : अरे! अरे लेकिन बात क्या है? हुजूर मुनीर साहब। आखिर ऐसी कौन-सी मुसीबत आ पड़ी। यह रोशनी-वोशनी का किस्सा क्या है?
- मुनीर : अरे यार रहमत, मैं बुरी तरह फँस गया हूँ। तबाह हो गया हूँ। बरबाद! मुझसे ज्यादा बदकिस्मत इन्सान और तुम्हें कहाँ मिलेगा?
- रहमत : लेकिन बात क्या है?
- मुनीर : तो तुम्हें पता नहीं अभी तक?
- रहमत : उँ हूँ। एक लफ़ज़ भी नहीं।
- मुनीर : मेरे अब्बा हुजूर नवाब बने मियाँ के साथ वापस आ रहे हैं। मेरे लिए बीवी लेकर।

- रहमत : तो इसमें परेशान होने की क्या बात है?
- मुनीर : तुम नहीं समझोगे।
- रहमत : आखिर आप कुछ कहें तो समझूँ। घबराइए नहीं, यह बंदा हर किस्म की मुसीबत में काम आनेवाला है।
- मुनीर : यार रहमत अगर तुमने इस मुसीबत से मेरा पीछा छुड़ा दिया तो ज़िंदगी भर गुलामी लिख दूँगा।
- रहमत : खैर, यह बात छोड़िए, लेकिन जब मैं किसी के काम पर अड़ जाता हूँ तो फिर मजाल है कोई रोक दे मुझे। वैसे मैं अपनी तारीफ़ नहीं कर रहा हूँ लेकिन जहाँ तक जालसाजी और भक्कारी का ताल्लुक़ है अपना इस दुनिया में कोई सानी नहीं। लेकिन ज़माना ऐसा बुरा आ गया है कि कोई क़दरदान नहीं मिलता, और इसीलिए एक छोटी-सी ठोकर खा लेने के बाद मैंने अब इस किस्म के मुआमलात में हाथ डालना ही छोड़ दिया।
- मुनीर : क्यूँ क्या हुआ था?
- रहमत : यूँ ही, ज़रा किस्सा इस किस्म का हुआ कि पुलिस तक नौवत पहुँच गई थी।
- मुनीर : पुलिस?
- रहमत : हूँ। हूँ। ज़रा आपस में मनमुटाव हो गया था।
- मुनीर : तुम में और पुलिस में?
- रहमत : हाँ, उन्होंने एक ऐसी हरकत की, कि मेरा दिल टूट गया। ज़माने की इस बेरहमी से मेरा दिल इतना बेज़ार हो गया कि मैंने क़सम खाई कि अब कभी किसी से हमदर्दी नहीं करूँगा। लेकिन आपकी बात दूसरी है। फ़र्माइये, क्या किस्सा है?
- मुनीर : तुम्हें याद है रहमत, दो महीने हुए जब से मेरे अब्बा हुजूर नवाब बन्ने मियाँ के कारोबार के सिलसिले में जहाज़ के जरिए सफ़र पर गए हुए हैं।
- रहमत : हाँ अच्छी तरह याद है।
- मुनीर : अफ़ज़ल मियाँ और मुझे दोनों को घर ही पर छोड़ दिया गया

था और तुम और हशमत हम दोनों की देखभाल के लिए  
चुने गए थे।

रहमत : और यह कोई नहीं कह सकता, कि हमने अपना फर्ज पूरी  
तरह अदा नहीं किया है।

मुनीर : कुछ ही अर्से बाद अफ़ज़ल मियाँ की मुठभेड़ एक खानावदोश  
लड़की से हो गई। और आँखें चार होते ही दोनों के दिलों  
में मुहब्बत की आग भड़क उठी।

रहमत : हाँ यह अच्छी तरह मालूम है।

मुनीर : उसने मुझे सब कुछ बता दिया। और एक दिन वो मुझे उस  
लड़की को दिखाने के लिए भी ले गया। लड़की मैंने देखी,  
काफ़ी अच्छी शक्ति की है, लेकिन इतनी हसीन भी नहीं है,  
जितनी वो बताने की कोशिश कर रहा था। रात-दिन उसी  
के गुन गाया करता था।

रहमत : मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर इस क़िस्से का ताल्लुक  
आपकी मुसीबत से क्या है?

मुनीर : एक दिन हम दोनों उस लड़की से मिलने जा रहे थे कि रास्ते  
में एक कोने के मकान से रोने-पीटने की आवाज़ सुनाई दी।  
दरयापूर्त करने पर मालूम हुआ कि यहाँ पर हाल ही में एक  
खानदान आकर बस गया है।

हशमत : और यह कि उनकी माली हालत इस क़दर ख़राब है कि  
सुननेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

रहमत : लेकिन आपकी मुसीबत से इस क़िस्से का ताल्लुक क्या है?

मुनीर : मैंने कहा, लाओ देखूँ आखिर क़िस्सा क्या है। हम दोनों के  
दोनों अंदर घर में गए। वहाँ जाकर क्या देखते हैं, कि एक  
नेक बूढ़ी औरत क़रीब-क़रीब अपनी साँस तोड़ चुकी है। और  
उसके पास एक दाई बैठी हुई रो रही है। यकायक मेरी नज़र  
बूढ़ी औरत के सिरहाने पर पड़ी। जो कुछ मैंने वहाँ देखा।  
उसे देखकर मैं लड़खड़ा गया। वो एक नवजवान लड़की थी,  
जिसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। उसकी

खूबसूरती देखकर मेरी आँखें कौंध-सी गईं। इतनी हसीन और दिलकश लड़की मैंने आज तक नहीं देखी।

रहमत : हाँ हाँ।

मुनीर : उसकी जगह उस वक्त कोई और लड़की होती तो इस हालत में अजीब दिखाई देती, लेकिन उसका हुस्न तो मालूम हो रहा था कि चार गुना ज्यादा हो गया है।

रहमत : हाँ। अब आए पते पर।

मुनीर : रहमत, अगर तुम कहीं उसे देख लेते तो यही समझते कि आसमान से कोई हूर उतरी है।

रहमत : बेशक़। मैं समझ सकता हूँ कि उसका हुस्न किस वला का होगा।

मुनीर : तुमने अक्सर यह देखा होगा कि जब लोग रोते हैं तो अजीब भोंडा-सा मुँह बनाते हैं लेकिन उस लड़की पर वो आँसू इस तरह सज रहे थे जैसे कि मोतियों की लड़ियाँ चेहरे पर बिखेर दी गई हों।

रहमत : बेशक़।

मुनीर : जब वो उस बूढ़ी औरत पर चीख़ मारकर गिरी और माँ कहकर पुकारा तो हम दोनों की आँखें आँसुओं से तर थीं।

रहमत : हाँ, काफ़ी दर्दनाक मंज़र होगा, और उसी चीज़ ने आपको मजबूर कर दिया कि आप उस पर अपना दिल निछावर कर दें।

मुनीर : उफ़क़ रहमत। एक वहशी भी उस वक्त उससे मुहब्बत किए बिना नहीं रहता।

रहमत : बिल्कुल, बेचारा किस तरह अपने आपको सम्हालता।

मुनीर : मैंने उसे काफ़ी दिलासा देने की कोशिश की, और उसके बाद हम दोनों दोस्त वहाँ से चले आए। रास्ते में मैंने अफ़ज़ल से पूछा कि उस लड़की के हुस्न के बारे में क्या ख्याल है। कहने लगा—‘काफ़ी अच्छी है।’ काफ़ी अच्छी है—जी चाहा मुँह तोड़ दूँ।

हशमत : आप अगर उसके यूँ ही गुन गाते रहे तो शाम हो जाएगी।

में मुख्तसर बता देता हूँ कि फिर क्या हुआ। उस दिन के बाद इनकी बेकरारी का यह आलम हुआ कि हर रोज़ उसे दिलासा देने के लिए वहाँ के चक्कर काटने लगे। उसकी माँ की मौत के बाद, अब उसकी दाई ने माँ की जगह ली। और उसकी शर्त यह है कि अगर वह उसकी लड़की से शादी करने को तैयार हैं तब तो यह उस घर में क़दम रख सकते हैं—वग्ना नहीं।

- रहमत : हूँ।
- हशमत : और अब यह दूसरी मुसीबत खड़ी हो गई है। इनके अब्बा हुजूर के वापस आने की उम्मीद अभी दो महीने तक और नहीं थी, दूसरे यह कि इनके चाचाजान को तमाम दास्तान का इलम हो चुका है और तीसरे यह कि उनके अब्बा हुजूर यह चाहते हैं कि उनकी शादी नवाब बन्ने मियाँ की दूसरी बीवी की जो लड़की है उससे तय हो जाए।
- मुनीर : और उस बेचारी लड़की के दिन इस तरह गुरबत में गुज़र रहे हैं कि मेरी समझ में नहीं आता कि उसकी किस तरह मदद करूँ।
- रहमत : बस। आपने तो राई का पहाड़ खड़ा कर दिया। इसमें घबराने की क्या बात है? तुमको तो शर्म आनी चाहिए कि इतनी सी बात के लिए तुम इतने परेशान हो। हृद हो गई। यानी इस उम्र में भी तुम्हारी अक़ल इस क़ाबिल नहीं है कि कोई रास्ता ढूँढ़ निकालें। बेवकूफी तेरा बुरा हो। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो पता नहीं क्या कर डालता। जब मैं इतना-सा था (हाथ से बताता है) तब से मैं उड़ती चिड़िया के पर काटना सीख गया था।
- हशमत : शुक्र है कि आपकी-सी समझ मुझमें नहीं है। कम-अज़-कम पुलिस है तो मुठभेड़ नहीं होती।
- मुनीर : हाँ, वो रही मेरे ख्वाबों की मलिका।  
(रज़िया दाखिल होती है)

- रजिया** : क्या यह सच है कि तुम्हारे अव्याजान घर वापस आ रहे हैं और वो तुम्हारी शादी किसी और लड़की से करना चाहते हैं?
- मुनीर** : हाँ मेरी मलिका। यह सच है, और यह सुनकर तो मेरे होश फाख्ता हो गए! लेकिन यह क्या? तुम्हारी आँखों में आँसू? क्या तुम्हें मेरी वफादारी में शक है? क्या तुम मुझे नहीं जानतीं कि तुम्हारी मुहब्बत में दीवाना हो चुका हूँ।
- रजिया** : हाँ, मैं जानती हूँ, यक़ीन है कि तुम, मुझसे मुहब्बत करते हो, लेकिन क्या तुम्हारी यह मोहब्बत इसी तरह क्रायम रहेगी?
- मुनीर** : यह न कहो! रजिया! मैं तुम पर अपनी ज़िंदगी न्यौछावर करने को तैयार हूँ।
- रजिया** : हाँ, लेकिन सुना है कि औरत हमेशा एक ही मर्तबा मुहब्बत करती है, लेकिन मर्दों की मुहब्बत की चिनगारी जल्द ही ठंडी हो जाती है।
- मुनीर** : आह! मेरे ख़्वाबों की मलिका, मेरा दिल और मर्दों की तरह नहीं है। मैं क़सम खाता हूँ कि मेरी यह मुहब्बत मरते दम तक क्रायम रहेगी।
- रजिया** : मुझे तुम्हारे चादों पर यक़ीन है, और मैं यह जानती हूँ, तुम मुझे कभी धोखा नहीं दोगे। लेकिन अगर तुम पर किसी ने ज़ोर दिया, तो हो सकता है, कि तुम्हारा दिल मेरी तरफ से फिर जाए। और फिर ये भी बात है कि तुम अपने अब्बा हुजूर के पूरे कब्जे में हो। (रोते हुए) अगर कहीं उन्होंने तुम्हारी शादी किसी और लड़की से कर दी तो मैं अपनी जान दे दूँगी।
- मुनीर** : दुनिया का कोई भी बाप मुझे मजबूर नहीं कर सकता कि मैं तुमसे बेवफ़ाई करूँ। अगर वक़्त पड़ा तो मैं अपना घर-बार छोड़ने के लिए तैयार हूँ, लेकिन तुम्हें अपने हाथों से जाने नहीं दूँगा। मैं उस लड़की को देख भी चुका हूँ और मुझे एक ही नज़र में उससे कुछ नफ़रत-सी हो गई है। मैं तो यही दुआ करता हूँ कि काश समंदर उसे, हमेशा के लिए हमसे दूर रखे। मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि अब ये अपने आँसू पोंछ लो।

- तुम्हारे ये आँसू देखकर मेरा दिल डूबने लगता है।
- रजिया :** बहुत अच्छा, मैं अपने आँसू पोंछने की कोशिश करती हूँ, और अपने आपको क्रिस्मत के हाथों सौंपती हूँ।
- मुनीर :** क्रिस्मत ज़रूर हमारा साथ देगी।
- रजिया :** अगर तुम सच्चे रहे तो ज़रूर देगी।
- मुनीर :** मैं सच्चा रहूँगा। वादा करता हूँ।
- रजिया :** तो फिर मैं भी खुश रहूँगी।
- रहमत :** (अलग) लड़की समझदार है, देखने में भी बुरी नहीं है।
- मुनीर :** (रहमत की तरफ इशारा करते हुए) यह रहमत है। इसने अगर चाहा तो हमें हर मुसीबत से बचा लेगा।
- रहमत :** मैं वैसे तो क़सम खा चुका हूँ, लेकिन अगर आप लोगों ने मेरी ज्यादा खुशामद की, तो फिर मुझे....
- मुनीर :** अगर खुशामद तुम्हें पिघला सकती है, तो मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ, कि तुम ही सम्हाल लो।
- रहमत :** (रजिया से) और आपको मुझसे कुछ नहीं कहना है?
- रजिया :** मैं भी तुम्हारी मिन्नत करती हूँ कि तुम हमें मुसीबत से बचा लो।
- रहमत :** अब मुझे अपनी क़सम तोड़नी पड़ेगी। अब मुझे अपने पथर दिल में हमदर्दी की लहर लानी ही पड़ेगी। बहुत अच्छा मैं मदद करने के लिए तैयार हूँ।
- मुनीर :** मैं क़सम खाता हूँ.....
- रहमत :** च च (रजिया से) अब जाइए मैं सब कुछ ठीक कर लूँगा। (रजिया चली जाती है)
- रहमत :** (मुनीर से) और अब तुम एक बहादुर की तरह अपने अब्बा हुजूर का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाओ।
- मुनीर :** उनका नाम सुनते ही मेरे होशो-हवास गुम हो जाते हैं। मेरी ये कमज़ोरी बचपन से है जिस पर क़ाबू पाना मुश्किल है।
- रहमत :** तुम्हें दिल मज़बूत करना ही पड़ेगा। वरना वे इस मौके से फ़ायदा उठाकर जो चाहेंगे कर गुज़रेंगे। लो आओ, दिल में

ज़रा हिम्मत लाओ, बहादुर बनो, तमाम सवालात के जवाब देने के लिए अभी से तैयार हो जाओ।

मुनीर : कोशिश करूँगा।

रहमत : आओ एक मर्तबा यूँ ही ज़रा करके देखें। हाँ, खड़े हो सीधे, छाती बाहर निकालो। सर ऊँचा करो, आँखों में चमक लाओ, शाब्दाश।

मुनीर : यूँ।

रहमत : हाँ और ज़रा।

मुनीर : यूँ।

रहमत : हाँ, यह बात। समझ लो कि मैं तुम्हारा अब्बा हुजूर हूँ, और अभी-अभी सफ़र से वापस आया हूँ। जो कुछ मैं सवाल करूँ, उनका जवाब पूरी हिम्मत से देना। हाँ, क्यों नालायक, बेहया, तेरी ये हिम्मत कैसे हुई कि मेरे साथ ऐसा बर्ताव करे? और इतनी जुर्त कैसे हुई, कि तूने मेरी गैरहाजिरी में ये हरकत की है, आखिर इसके माने क्या हैं? क्या मैंने इसी दिन के लिए पाल-पोस कर बड़ा किया था कि तू मेरी नाक काट दे? क्या मेरी मेहनत का यही बदला था। मेरी सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी, क्या एक बाप की इज़्ज़त इस तरह की जाती है (जरा सम्हल कर) बदमाश, लुच्ये, तूने बगैर मुझे बताए हुए एक लड़की से इश्क के पतंग उड़ाने शुरू कर दिए और उससे शादी तक करने को तैयार हो गया। बता बोलता क्यों नहीं, जबान नहीं है क्या। हद हो गई तुम्हारे होश ही उड़ गए।

मुनीर : इसलिए कि इस वक्त आप बिल्कुल मेरे अब्बा हुजूर दिखाई दे रहे हैं।

रहमत : इसीलिए तो कह रहा हूँ कि ज़रा मर्द बनने की कोशिश करो।

मुनीर : बहुत अच्छा, अब मैं वाकई बहादुर बनूँगा, और उनका मुँह तोड़ जवाब दूँगा। वादा करता हूँ।

रहमत : तो फिर, वो रहे आपके अब्बा हुजूर।

मुनीर : (घबराकर) ओ हो.... मार डाला। (भाग जाता है)

- रहमत** : ओ मुनीर, ठहरो तो। मुनीर....देखा भाग गया। अजीव बण्डल आदमी है। अब इस बुड़दे का हम दोनों को मुकावला करना ही पड़ेगा।
- हशमत** : लेकिन मैं उनसे क्या कहूँगा?
- रहमत** : कहना-वहना मुझ पर छोड़ दो। वस देखते रहो (हशमत सिसकने की कोशिश करता है, कि नवाब मुज्जे मियाँ दाखिल होते हैं।)
- मु. मियाँ** : (जिन्होंने उन्हें देखा नहीं है) ऐसी हरकत की है कि सर फोड़ लेने को जी चाहता है।
- रहमत** : (हशमत से) ओ सारी बातें सुन चुका है और उस पर इतना असर हुआ है कि अपने आपसे बातें कर रहा है।
- नवाब** : नालायकी की हद हो गई। मैं तो अब इस चीज़ का इंतज़ार कर रहा हूँ कि वो नालायक उससे शादी के बारे में क्या बहाने बनाता है।
- रहमत** : (अलग) घबराओ नहीं, वो सब तय हो चुका है।
- नवाब** : हो सकता है कि वो अपनी इस हरकत को मानने से साफ़ इनकार कर दे।
- रहमत** : (अलग से) जी नहीं, हमने इस बारे में सांचा तक नहीं है।
- नवाब** : हो सकता है कि उसको सही सावित करने की कोशिश करे।
- रहमत** : (अलग) हो सकता है।
- नवाब** : कहीं ऐसा न हो कि वो मेरे सामने एक अजीबों-गरीब कहानीं गढ़कर केस करने की कोशिश करे।
- रहमत** : (अलग से) शायद।
- नवाब** : वो कुछ भी कहे मुझ पर असर नहीं होने का।
- रहमत** : (अलग से) देख लेंगे।
- नवाब** : मुझ पर रोब डालने में वो कभी कामयाव नहीं हो सकते।
- रहमत** : (अलग से) इस भरोसे पर मत रहो।
- नवाब** : अपने इस नालायक बेटे को तो मैं जल्द ही ऐसी जगह भेज दूँगा कि वापस ही न आ पाये।

**रहमत** : (अलग से) इसका इलाज हम कर लेंगे।

**नवाब** : और इस बदमाश हशमत की तो मैं चमड़ी उतार कर फेंक दूँगा।

**हशमत** : हाँ मेरा जिक्र तो आना ही था।

**नवाब** : (यकायक उनकी नज़र हशमत पर पड़ती है) आँ, तो यहाँ हैं आप मेरे नमक-हलाल।

**रहमत** : शुक्र है हुजूर कि आप सही-सलामत घर वापस लौटे।

**नवाब** : अच्छे तो हो रहमत? (हशमत से) तुमने अपना फर्ज बहुत ही उम्दा तरीके से निभा दिया। मेरे फर्जन्दे अर्जमन्द मेरी गैर-हाजिरी में बहुत ही शरीफाना ज़िंदगी गुजारते रहे।

**रहमत** : आप तो वाकई निहायत तंदुरुस्त दिखाई दे रहे हैं।

**नवाब** : शुक्रिया, शुक्रिया (हशमत से) तू क्या गूँगा हो गया है। बदमाश गूँगा हो गया है क्या?

**रहमत** : आपका सफर तो कामयाब रहा?

**नवाब** : हाँ, हाँ, निहायत कामयाब रहा—हूँ मुझे इत्मीनान से इसकी खबर लेने दो।

**रहमत** : खबर!

**नवाब** : हाँ हाँ खबर।

**रहमत** : किसकी खबर हुजूर?

**नवाब** : इस लुच्चे की।

**रहमत** : लेकिन हुजूर इसका कुसूर क्या है?

**नवाब** : कुसूर? तुम्हें पता नहीं कि मेरे जाने के बाद उसने क्या गुल खिलाया है।

**रहमत** : जी हाँ कुछ हुआ तो था।

**नवाब** : कुछ हुआ था। ज़लज़ला आ गया था, और तुम कहते हो कि कुछ हुआ था।

**रहमत** : जी हाँ, बजा फरमाते हैं आप। आपका खफा होना बजा है।

**नवाब** : इससे ज्यादा जलील हरकत और क्या होगी?

**रहमत** : सच है, सच है।

- नवाब** : बाप की इज़ाज़त के बगैर शादी करना ?  
**रहमत** : जी हाँ, बजा फ़रमाते हैं, लेकिन मैं अगर आपकी जगह होता तो इतना परेशान न होता।
- नवाब** : (मुझे इस बारे में तुमसे इखिलाफ़ है) मैं जितना चाहूँगा परेशान होऊँगा। हद हो गई इतनी ज़र्लील हरकत के बारे में सुनकर क्या मुझे गुस्सा भी नहीं आएगा ?
- रहमत** : जहाँ तक गुस्से का सवाल है, तो जब मैंने इस बारे में सुना था तो मुझे भी बड़ा गुस्सा आया था। बल्कि मैं तो इस हद तक पहुँच गया कि मैंने उसकी काफ़ी लानत-मलामत की। पूछ लीजिए उससे, मैं किस बुरी तरह से पेश आया था शायद आप खुद भी इतनी सख्ती से पेश नहीं आते। मैंने उससे कहा कि ऐसे शरीफ़ बाप के तो तुम्हें कदम चूमना चाहिए, ना कि इस किस्म की हरकतें। लेकिन काफ़ी डॉट-डपट के बाद मैंने यह सोचा कि इतना गुस्सा भी अच्छा नहीं है, और वैसे भी अभी पानी सर से नहीं गुज़रा है।
- नवाब** : क्या बकते हो जी, पानी सर से नहीं गुज़रा ? पता नहीं कहाँ से लड़की उठा लाया, न खानदान का पता, न माँ-बाप का।
- रहमत** : हुजूर, किसी को क्या पता था, मुमकिन है इसकी किस्मत में यही लिखी हो।
- नवाब** : हाँ, और क्या, इससे बेहतर बहाना और क्या हो सकता है ? दुनिया भर के गुनाह करो, चोरी करो, दगाबाजी करो, खून करो और फिर यह कह दो कि यह सब तो किस्मत में लिखा हुआ है।
- रहमत** : माफ़ कीजिएगा, मैंने ग़लत जुमला इस्तेमाल कर दिया होगा। मेरा मतलब यह था कि वो खुद फ़ौस ही इस तरह गया था कि मजबूर हो गया।
- नवाब** : इसने मजबूर होने का मौका ही क्यों दिया ?
- रहमत** : अब हुजूर, वो आपकी ही समझ और दूरअन्देशी कहाँ से ला सकता है ? बच्चा फिर भी बच्चा है, नातजुर्बेकारी की वजह

से उनसे यह गलतियाँ हो ही जाती हैं। मसलन अब आप अफ़ज्जल मियाँ ही को ले लीजिए। वो तो आपके बेटे से भी एक पग आगे हैं। हालाँकि मैंने पूरी कोशिश की, लेकिन सब बेकार। अब आप ही को लीजिए, आपका भी तो कभी जमाना था, मैंने तो यहाँ तक सुना है, कि जहाँ कहीं लड़की की नज़र आप पर पड़ी और वो वहाँ आह भर के बैठ गई। और फिर ये कि इसे आप निभाना भी खूब जानते थे।

**नवाब :** हाँ, हाँ, सही कहते हो। लेकिन मैं इस बेवकूफी की हद तक कभी न बढ़ा जो कि यह नालायक बढ़ चुका है। नालायकी की हद है जनाब।

**रहमत :** तो फिर हुजूर आखिर आप उससे चाहते क्या हैं? उसने एक खूबसूरत लड़की को देखा, आँखें चार हुई, लड़की का दिल उसके लिए बेकरार हो गया। वैसे देखा जाए तो ये गुन भी उसने आप ही से पाया है। यानि कि निगाहें टकराई और लड़की बेकरार हुई। आपस में इश्क की पतंगें लड़ने लगीं। 006969 यहाँ तक कि दोनों इश्क के समंदर में गोते लगाने लगे। यकायक उस लड़की के रिश्तेदार तलवार और भाले हाथों में लिए हुए उन दोनों को शादी पर मजबूर करते हैं। फिर आप ही बताएँ वो क्या कर सकता था? क्या आप ये गवारा कर सकते हैं, कि वो अपनी जान दे देता। इस किस्म की मौत से तो यही बेहतर है कि चुपचाप शादी कर ले।

**नवाब :** मुझे किसी ने क्यों नहीं बताया कि बात यूँ हुई थी।

**रहमत :** (हशमत की तरफ इशारा करते हुए) इससे पूछ लीजिए, यह भी यही कहेगा।

**नवाब :** (हशमत से) तो क्या वाकई उसे शादी करने पर मजबूर किया गया था।

**हशमत :** जी हाँ। हुजूरे आला।

**रहमत :** भला मेरी हिम्मत है, कि मैं आपके सामने झूठ बोलूँ?

**नवाब :** तो उसे चाहिए कि वो फौरन जाकर पुलिस में रिपोर्ट लिखा दे।

- रहमत : अरे हुजूर, वही तो वह करना नहीं चाहता है।
- नवाब : तुम समझे नहीं। इससे कम-से-कम यह तो होगा कि शादी मनसूख करने में मुझे काफी आसानी हो जाएगी।
- रहमत : शादी मनसूख करने में?
- नवाब : बेशक़।
- रहमत : आप यह कभी नहीं करेंगे।
- नवाब : नहीं करेंगे?
- रहमत : जी नहीं।
- नवाब : क्या, तुम्हारा मतलब क्या है? यानी कि मुझे एक बाप का हक़ भी हासिल नहीं, कि मेरे बेटे पर जो जुल्म हुए हैं उनका बदला चुकाऊँ।
- रहमत : वो यह बात कभी नहीं मानेगा।
- नवाब : नहीं मानेगा?
- रहमत : नहीं।
- नवाब : मेरा बेटा?
- रहमत : आपका बेटा। क्या आप यह गवारा कर लेंगे कि वो सब के सामने अपने आपको बुज़दिल करार दे। और यह मान ले कि उसकी वह शादी ज़बरदस्ती करवाई गई थी? क्या फ़रमाते हैं आप? क्या आप समझते हैं कि वो अपनी इज़्ज़त-आबरू को ख़ाक़ में मिलाने के लिए तैयार हो जाएगा? क्या वो अपने अब्बा हुजूर के नामोनुमूद से पूरी तरह वाकिफ़ नहीं है?
- नवाब : क्या बकवास है?
- रहमत : बकवास? यानी कि क्या फ़रमाते हैं आप? आपकी और उसकी दोनों की इज़्ज़त व आबरू के लिए यह भी ज़रूरी है कि दुनिया इसी धोखे में रहे कि उनकी शादी हँसी-खुशी हुई है।
- नवाब : मेरी और उसकी दोनों की इज़्ज़त व आबरू के लिए यह भी ज़रूरी है कि जो कुछ तुमने कहा है वो उससे बिल्कुल उल्टा कहे।
- रहमत : वो यह भी नहीं मानेगा।

- नवाब : वो मुझ पर छोड़ दो ।  
 रहमत : वो यह कभी नहीं करेगा । आप देख लीजिएगा ।  
 नवाब : उसे यह करना ही पड़ेगा । वरना मैं उसे जायदाद से महरूम कर दूँगा ।  
 रहमत : क्या वाक़ई आप संजीदा हैं?  
 नवाब : बिल्कुल ।  
 रहमत : बहुत अच्छा ।  
 नवाब : क्या मतलब । बहुत अच्छा?  
 रहमत : आप उसे जायदाद से महरूम नहीं करेंगे ।  
 नवाब : मैं उसे महरूम नहीं करूँगा ।  
 रहमत : नहीं ।  
 नवाब : नहीं?  
 रहमत : नहीं ।  
 नवाब : क्या कमाल है साहब । यानी कि मैं अपने बेटे को जायदाद से महरूम नहीं करूँगा ।  
 रहमत : मैं कहता हूँ कि नहीं ।  
 नवाब : और मुझे रोकेगा कौन?  
 रहमत : आप खुद ।  
 नवाब : मैं खुद?  
 रहमत : जी आपका दिल नहीं मानेगा ।  
 नवाब : मानेगा कैसे नहीं?  
 रहमत : आप मज़ाक कर रहे हैं ।  
 नवाब : कमाल है साहब ।  
 रहमत : एक बाप की मोहब्बत उसके लिए भीख माँगेगी ।  
 नवाब : कोई भीख-वीख नहीं माँगेगी ।  
 रहमत : जी माँगेगी कैसे नहीं ।  
 नवाब : मैं कहता हूँ कि नहीं ।  
 रहमत : वकवास ।  
 नवाब : अब वकवास कहना फ़जूल है ।

**रहमत :** मैं आपसे अच्छी तरह वाकिफ़ हूँ। आप दिल के निहायत ही अच्छे हैं।

**नवाब :** मैं बिल्कुल अच्छा नहीं हूँ। मैं जब चाहूँ बहुत ही बुरा बन सकता हूँ। पर, काफ़ी हो गई यह बहस। अब मुझे गुस्सा आने लगा है। (हशमत से) अरे वो नमक हराम, जा जाकर मेरे नालायक बेटे को यहाँ ले आ। (अलग से) इस दौरान मैं नवाब बन्ने मियाँ को तलाश करता हूँ ताकि उन्हें अपनी बदकिस्मती का हाल सुना दूँ।

**रहमत :** हुजूर, अगर मैं आपके लायक कोई खिदमत अदा कर सकता हूँ तो आपको सिर्फ हुक्म देने की देर है।

**नवाब :** मैं तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूँ। (अलग) उफ्फ, आखिर मेरी एक ही औलाद क्यूँ है? काश मेरी वो मरहूम लड़की इस वक्त ज़िंदा होती, तो मैं उसे अपना वारिस बना देता। (बाहर जाता है।)

**हशमत :** यार रहमत, तुम तो गज़ब के आदमी निकले। अब तो ये तमाम मुसीबतें धुल गई। सिर्फ एक क़सर बाक़ी रह गई है, और वो है पैसा। हमें भी आखिर ज़िंदा रहना ही है और फिर ये महाजन खामखा नाक में दम किए हैं।

**रहमत :** वो सब छोड़ वो मुझ पर। मैंने सब के रास्ते निकाल लिए हैं। मुझे सिर्फ एक ऐसे आदमी की ज़रूरत है जिस पर कि मैं भरोसा कर सकूँ। एक काम लेना है मुझे उससे। अरे ज़रा देखो तो उस तरफ। टोपी ज़रा अपनी आँखों पर तो ले आओ। ठीक है। अब ज़रा अपने हाथ कमर पर रखो, आँखों में एक खौफनाक चमक लाओ। शाबाश। अब ज़रा बड़े-बड़े कदम लेकर चलो तो। बिल्कुल ठीक। बस, बन गया काम। अब चलो मेरे साथ। मुझे तुम्हारा हुलिया एक डाकू की शक्ति में तब्दील करना है। और मैं तुम्हें बताऊँगा कि किस तरह बहुरुपिया बना जाता है।

हशमत : अगर कहीं ऊपर से पुलिस आ गई तो।  
रहमत : घबराओ मत। मैं खुद अपनी गर्दन खतरे में डाल रहा हूँ।  
बहादुर बनने के लिए वरसों की मेहनत दरकार होती है।  
(पर्दा गिरता है।)

## दूसरा अंक

(नवाब बन्ने मियाँ और नवाब मुन्ने मियाँ दाखिल होते हैं।)

- ब. मियाँ : जी हाँ, अगर हवा मुआफ़िक़ रही तो आज उन्हें यहाँ पहुँच जाना चाहिए। एक मल्लाह ने मुझे बताया है कि जिस दिन वो वहाँ से चला था, वो लोग भी निकलने की तैयारी कर रहे थे। लेकिन आपने जो यह मनहूस खबर अपने बेटे के बारे में सुनाई है, वह हमारे तमाम इरादों पर पानी फेर सकती है। और इसीलिए अब तो मेरी लड़की का यहाँ पहुँचना और भी मुसीबत पैदा कर देगा।
- मु. मियाँ : घबराइए नहीं, मैं सब ठीक-ठाक कर दूँगा। और इसी इरादे से मैं जा भी रहा हूँ।
- ब. मियाँ : औलाद को पाल-पोस कर बड़ा करना वाक़ई बड़ी हुशियारी का काम है।
- मु. मियाँ : सही फ़रमाते हैं आप, लेकिन इस जुमले की वजह?
- ब. मियाँ : इसलिए कि एक नौजवान इस किस्म की ग़लती करता है, तो उसकी वजह यह है कि उसकी घरेलू तालीम में कमी रह गई है।
- मु. मियाँ : हाँ अक्सर यही होता है। लेकिन आपके यह कहने का मतलब?
- ब. मियाँ : मतलब क्या है?
- मु. मियाँ : जी।
- ब. मियाँ : मतलब यह कि अगर एक अच्छे और शरीफ बाप की तरह—जैसे

कि आप हैं, अगर आप इसकी तरबियत में होशियारी से काम लेते तो आज ये दिन देखना नसीब न होता।

मु. मियाँ : जी बहुत-बहुत शुक्रिया। आपने तो खैर, अपने बच्चों की तरबियत निहायत ही आला तरीकों पर की है।

ब. मियाँ : बिल्कुल। अगर कहीं मेरा लड़का इस किस्म की हरकत कर बैठे तो मैं उसके साथ निहायत ही सख्ती से पेश आऊँ।

मु. मियाँ : फर्ज कीजिए कि अगर आपके ये होनहार फर्जन्द-जिनकी तरबियत आपने इतने आला तरीके पर की है, मेरे बेटे से भी ज्यादा बुरी हरकत कर बैठे हों तो?

ब. मियाँ : जी, क्या फरमाया आपने?

मु. मियाँ : क्या फरमाया, क्या?

ब. मियाँ : मेरा मतलब है कि, मतलब क्या है आपका?

मु. मियाँ : मतलब यह है, बन्ने मियाँ, कि पहले इन्सान को अपने गिरेबाँ में मुँह डालकर देखना चाहिए। शीशे के मकान में रहकर दूसरों के घरों पर पथर नहीं मारना चाहिए।

ब. मियाँ : यह पहली तो मेरी समझ से बाहर है।

मु. मियाँ : जल्द ही समझ में आ जाएगी।

ब. मियाँ : क्या आपने कुछ मेरे बेटे के बारे में सुना है।

मु. मियाँ : फर्ज कीजिए, कि अगर मैंने कुछ सुना भी तो?

ब. मियाँ : आखिर कुछ कहिए तो।

मु. मियाँ : आपके मुलाज़िम रहमत ने यूँ ही राह चलते यह खबर सुना दी थी, अगर आपको यक़ीन न हो तो आप उससे या किसी और से, इसकी पूछ ले सकते हैं। मैं यहाँ से सीधा वकील के पास जा रहा हूँ। देखता हूँ इस बारे में क्या राय देता है। आपका यह बन्दा नाचीज़ आदाब अर्ज़ करता है।

(जाता है)

ब. मियाँ : (अलग) आखिर बात क्या है? इससे बुरी खबर और क्या हो सकती है, यानी कि एक बेटा इससे ज्यादा और क्या बुरी हरकत कर सकता है? माँ-बाप की रज़ामन्दी के बगैर शादी

करना मेरी नज़रों में सबसे बुरी चीज़ है।

(अफ़ज्जल दाखिल होता है)

अफ़ज्जल : (दौड़कर गले लगाने की कोशिश करता है) अस्लाम आलेकुम,  
अब्बा मियाँ। आप वापस तशरीफ़ ले आए?

ब. मियाँ : वालेकुम सलाम। लेकिन ज़रा दूर से। पहले मुझे तुमसे एक  
सवाल करना है।

अफ़ज्जल : लेकिन अब्बा मियाँ पहले गले तो मिल लीजिए।

नवाब : गले वगैरा बाद में।

अफ़ज्जल : लेकिन अब्बा मियाँ आप इतनी दूर से सफ़र से आए हैं और  
मैं...

नवाब : नहीं इससे पहले मेरे सामने जो एक पहेली खड़ी हो गई है  
उसे भी बुझाना है।

अफ़ज्जल : कैसी पहेली?

नवाब : मेरी तरफ़ देखो?

अफ़ज्जल : क्या, बात क्या है?

नवाब : मेरी आँखों में आँखें डालकर देखो।

अफ़ज्जल : देख लिया।

नवाब : अब बताओ, कि यह सब क्या है?

अफ़ज्जल : यह सब क्या है?

नवाब : हाँ! मेरी पीठ पीछे यह सब गुल खिलाए हैं?

अफ़ज्जल : लेकिन मैं खिला सकता भी क्या था?

नवाब : मैं यह नहीं कहता, कि क्या खिला सकते थे। मैं यह कह  
रहा हूँ कि तुमने क्या खिलाये हैं?

अफ़ज्जल : मैंने? मैंने कोई ऐसी हरक़त नहीं की है, जिससे आपको  
शिकायत का मौक़ा मिल सके।

नवाब : नहीं।

अफ़ज्जल : जी नहीं।

नवाब : बेशर्मी की हद है।

अफ़ज्जल : इसलिए कि मैं जानता हूँ कि मैं बेकसूर हूँ।

- नवाब : लेकिन रहमत के मुँह से कुछ और ही सुन रहा हूँ।
- अफ़ज़ल : रहमत?
- नवाब : हाँ। अब क्यूँ चौंके?
- अफ़ज़ल : रहमत ने मेरे बारे में आपको कुछ बताया है?
- नवाब : खैर, इस किससे को तो मैं यहीं छोड़ता हूँ। इस किस्म की बात के लिए यह जगह मुनासिब नहीं है। लेकिन मैं इस बारे में पूरी मालूमात हासिल करके रहूँगा। चलो अब घर जाओ। मैं सीधा वहीं जा रहा हूँ। अगर तुम अपनी हरक़तों से बाज़ न आए तो ज़िन्दगी भर तुम्हारा मुँह न देखूँगा। (जाता है)
- अफ़ज़ल : (अलग) नमक हराम कहीं का, बिच्छू। मौक़ा पड़ते ही डंक मार गया। अब्बा मियाँ के सामने सब कुछ उगल दिया। लेकिन मैं भी वो बदला लूँगा कि ज़िन्दगी भर याद रखेगा।  
(रहमत और मुनीर दाखिल होते हैं)
- मुनीर : यार रहमत, तुम तो कमाल के आदमी निकले। मैं तुम्हारा यह एहसान ज़िन्दगी भर न भूलूँगा। वाक़ई किस्मत वाला हूँ, जो तुम जैसा हीरा मिला।
- अफ़ज़ल : (रहमत से) हाँ। तो आ गए तुम। तुम्हें देख कर तो मैं खिल उठता हूँ।
- रहमत : यह ख़ादिम आपकी इस ज़रा नवाज़ी का एहसानमंद है।
- अफ़ज़ल : (तलवार निकालते हुए) अभी मैं तेरी सारी ज़रा नवाज़ी निकाले देता हूँ। ठहर तो सही।
- अफ़ज़ल : (घुटनों के बल गिरते हुए) हुजूर।
- मुनीर : (बीच में पड़ते हुए) अफ़ज़ल क्या कर रहे हो?
- अफ़ज़ल : मुनीर, तुम इस वक्त बीच में न बोलो।
- रहमत : लेकिन हुजूर-हुजूर?
- मुनीर : खुदा के लिए—सुनो तो।
- अफ़ज़ल : छोड़ दो मुझे। मुझे इसकी ज़लालत का मज़ा चखाना है।
- मुनीर : लेकिन इसका कुसूर तो बताओ।
- रहमत : जी हाँ हुजूर। आखिर मेरा कुसूर तो बताओ।

अफ़ज्जल : मुझे अच्छी तरह मालूम है—बदमाश कहीं का।

मुनीर : अरे-अरे क्या कर रहे हो यार।

अफ़ज्जल : नहीं, मुनीर, पहले इसने जो नमकहरामी की है वो कुबूलवाना चाहता हूँ और वो भी इसी वक्त। फौरन। तू यह समझता था कि मेरे पंजे से बच जाएगा। हूँ लेकिन मुझे तेरी सारी बदमाशी मालूम हो चुकी है। फौरन कुबूल कर, वर्ना यह तलवार भी तेरे जिस्म के पार होगी।

रहमत : आं, आं-न-न-लेकिन हुजूर, आपका दिल यह कैसे गवारा कर लेगा?

अफ़ज्जल : मेरे पास फ़जूल वक्त नहीं है।

रहमत : तो क्या हुजूर मुझसे कुछ गलती हो गई है?

अफ़ज्जल : अबे गलती के बच्चे, तुझे भी अच्छी तरह मालूम है कि मैं किस बारे में पूछ रहा हूँ।

रहमत : खुदा की क़सम, मुझे कुछ पता नहीं, आप फ़रमा रहे हैं।

अफ़ज्जल : (बढ़ते हुए) पता नहीं है?

रहमत : ख़ैर, अब अगर आप मज़बूर करते हैं तो सुन लीजिए। याद है कुछ रोज़ हुए आपने विलायत से एक ख़ास शराब मँगायी थी, लेकिन उसके पीपे में कहीं से छेद हो गया था, और वो तमाम शराब बह गई थी। असल बात यह थी, कि मैं और मेरे दोस्त शराब चट कर गए थे, और आपको धोखे में रखने के लिए पीपे के आरपार पानी डाल दिया था, ताकि आप समझें कि शराब बह गई है।

अफ़ज्जल : ओह, तो वह हरक़त तुम्हारी थी। और मैंने ख़ामख़ाह मुलाज़िमों को झिड़क डाला। यह समझकर कि कुसूर उसका है।

रहमत : जी हाँ, हुजूर, मैं इस कुसूर की मुआफ़ी चाहता हूँ।

अफ़ज्जल : माफ़ किया लेकिन जिस चीज़ के बारे में मैं पूछ रहा हूँ वह यह बात नहीं थी।

रहमत : वह बात नहीं थी हुजूर?

अफ़ज्जल : नहीं। वो इससे कहीं ज्यादा अहम बात है, और मैं तुझसे इसी

वक्त कुबूलवाकर छोड़ूँगा ।

रहमत : लेकिन हुजूर, मुझे इसके सिवा और कुछ याद नहीं है ।

अफ़ज़ल : (धमकाते हुए) तो तुम नहीं फूटोगे?

रहमत : आह—

(अफ़ज़ल मुनीर को पकड़ लेता है)

रहमत : तो फिर सुन लीजिए—याद है, तीन हफ्ते पहले, आपने मुझे एक घड़ी दी थी ताकि मैं उसे एक खानाबदोश लड़की को, जिससे आप इश्क फ़रमाते हैं, जाकर दे आऊँ । मैं जब वहाँ से वापस आया था, तो मेरा चेहरा खून से लथपथ था । और मेरे तमाम कपड़े मिट्टी से अटे हुए थे । और मैंने आपको बताया कि रास्ते में मुझे कुछ चोर, लुटेरे मिल गए थे, जिन्होंने मुझे खूब मारा-पीटा और घड़ी मुझसे छीन ली । असल बात यह थी—वो घड़ी मैंने खुद ही चुराई थी ।

अफ़ज़ल : तुमने चुराई थी? मेरी घड़ी?

रहमत : जी हाँ हुजूर । ताकि मुझे हमेशा सही वक्त मालूम होता रहे ।

अफ़ज़ल : हाँ । तो आज मैं बहुत कुछ सीख रहा हूँ । मेरा निहायत ही ईमानदार आदमी से सामना पड़ा है । लेकिन यह बात भी नहीं है जिसके बारे में मैं तुझसे पूछ रहा हूँ ।

रहमत : नहीं ।

अफ़ज़ल : नहीं पाजी, नहीं । वो इससे भी बदतर चीज़ है ।

रहमत : (अलग से) दिमाग़ चाट गया ।

अफ़ज़ल : जल्दी करो, जल्दी । सारा दिन नहीं पड़ा है ।

रहमत : हुजूर बस, इतना ही था ।

अफ़ज़ल : ओर, ओर, ओर ।

रहमत : अच्छा तो फिर सुन लीजिए—याद है छः महीने हुए आपका रात के वक्त एक बदमाश से साबक़ा पड़ा था और उसने बुरी तरह से आपकी हड्डियाँ-पसलियाँ नरम की थीं, और भागते वक्त घबराहट के मारे एक गड्ढे में औंधे मुँह गिर पड़े थे और आपकी गर्दन टूटते-टूटते बची थी ।

- अफ़ज्जल : हाँ तो।
- रहमत : हुजूर वो बदमाश मैं ही था।
- अफ़ज्जल : तू था? बदमाश लुच्चा कहीं का।
- रहमत : हुजूर वो मैंने, इसलिए किया था कि आइंदा आप कभी हम लोगों को आधी रात के वक्त काम के लिए दौड़ाया नहीं करेंगे, जैसा कि आप हमेशा किया करते हैं।
- अफ़ज्जल : मैं यह सब कुछ आइंदा के लिए याद रखूँगा। और तेरा अच्छी तरह से इलाज करूँगा। लेकिन इस वक्त तू यह बता कि तूने मेरे अब्बा मियाँ से क्या कहा था?
- रहमत : आपके अब्बा मियाँ से?
- अफ़ज्जल : हाँ बे हाँ। आस्तीन के साँप, मेरे अब्बा मियाँ से क्या कहा था तूने।
- रहमत : लेकिन हुजूर, उनकी वापसी के बाद से तो मेरी उनसे मुलाकात भी नहीं हुई।
- अफ़ज्जल : मुलाकात नहीं हुई?
- रहमत : जी नहीं हुजूर।
- अफ़ज्जल : झूठ बोलता है तू।
- रहमत : जी नहीं हुजूर। आप खुद उनसे पूछ सकते हैं।
- अफ़ज्जल : अबे उन्होंने खुद ही मुझसे यह बात कही थी।
- रहमत : तो फिर माफ़ कीजिएगा—वो साफ़ झूठ बोल गए।  
(मस्तू दाखिल होता है)
- मस्तू : हुजूर, एक बड़ी बुरी खबर लाया हूँ।
- अफ़ज्जल : क्या हुआ?
- मस्तू : खानाबदोश आपकी चहीती नीली को ज़बरदस्ती उठाके ले जा रहे हैं। बुरे हाल हैं उसके हुजूर। उसने रो-रो कर मुझ से यह दरखास्त की है, कि मैं आपके पास जाकर आपको यह खबर दूँ कि अगर दो घंटों के अंदर ही अंदर आपने उन्हें रुपये नहीं भेजे तो आप हमेशा के लिए उसे खो बैठेंगे।
- अफ़ज्जल : दो घंटों के अंदर ही अंदर?

**मस्तू** : जी हाँ हुजूर? (चला जाता है।)

**अफ़ज़ल** : ओह मेरे अच्छे रहमत। खुदा के लिए मेरी मदद करो।

**रहमत** : (रुठता है और ज़रा ऐंठ कर सामने से गुज़रता है) ओह मेरे अच्छे रहमत। अब वक्त पड़ा तो मेरे अच्छे रहमत हो गया।

**अफ़ज़ल** : मैं तुम्हारे पिछले सारे कुसूर माफ़ कर दूँगा।

**रहमत** : जी नहीं, कोई ज़खरत नहीं है माफ़ करने की। तलवार पार कर दीजिए मेरे। बेहतर है आप मेरी जान ही ले लें।

**अफ़ज़ल** : कैसी बातें कर रहे हो? खुदा के लिए मुझे बचा लो।

**रहमत** : नहीं नहीं, बेहतर है कि यह तलवार मेरे जिस्म के पार ही हो जाए।

**अफ़ज़ल** : मैं तुम्हें कैसे खो सकता हूँ? हमेशा आड़े वक्त में तुम मेरे काम आए हो। इस वक्त भी बचा लो मुझे।

**मुनीर** : रहमत, अब कुछ न कुछ तो तुम्हें इनके लिए करना ही पड़ेगा।

**रहमत** : अजी वाह! इनका अभी बर्ताव देखा था आपने मेरे साथ?

**अफ़ज़ल** : अरे अब भूल जाओ इसे। मैं माफ़ी चाहता हूँ बस।

**मुनीर** : अरे अब भूल भी जाओ रहमत।

**रहमत** : आपको पता नहीं मुझे किस कद्र ज़हनी तकलीफ़ हुई है।

**मुनीर** : अब पिछली बातों को याद करने से क्या फायदा?

**अफ़ज़ल** : मुझसे ग़्लती हो गई थी। मैं मानता हूँ।

**रहमत** : लुच्चा, पाजी, बदमाश—सभी कुछ कह डाले।

**अफ़ज़ल** : मैं सच्चे दिल से माफ़ी चाहता हूँ, रहमत। इस वक्त मेरा साथ न छोड़ो। यह लो मैं तुम्हारे सामने घुटनों पर गिर जाता हूँ।  
(घुटनों पर गिरता है)

**मुनीर** : रहमत, अरे हटाओ, अब मुआफ़ भी कर दो।

**अफ़ज़ल** : चलो कर दिया, मुआफ़। लेकिन आइंदा कुछ करने से पहले ही सोच लिया कीजिएगा।

**अफ़ज़ल** : तो फिर कुछ मेरी मदद करोगे?

**रहमत** : सोचूँगा।

**अफ़ज़ल** : लेकिन इस वक्त सोचने का वक्त ही कहाँ है?

- रहमत : घबराओ नहीं, कितने रुपयों की ज़रूरत है?
- अफ़ज्जल : पाँच सौ की।
- रहमत : (मुनीर से) और तुमको?
- अफ़ज्जल : दो सौ।
- रहमत : कोई बात नहीं। मैं तुम दोनों के बालिदों से ये रुपये निकाल लूँगा। (मुनीर से) जहाँ तक तुम्हारे अब्बा हुजूर का सवाल है तो उसका हल मैंने सोच भी लिया है। (अफ़ज्जल से) और तुम्हारे लिए तो मुझे और भी कम दिक्कत होगी। हालाँकि उनकी मुट्ठी हमेशा बंद रहती है, लेकिन शुक्र है खुदा ने अक़्ल कुछ कम ही दी है। बुरा न मानिए। आप में और उनमें ज़मीन-आसमान का फ़र्क है।
- अफ़ज्जल : तो फिर चलो।
- रहमत : वो देखो, सामने से मुनीर मियाँ के अब्बा हुजूर तशरीफ ला रहे हैं। पहले मुझे उनसे निपट लेने दो। मेरा ख्याल है अब तुम दोनों यहाँ से छू हो जाओ। (मुनीर से) और हाँ, हशमत को जल्दी से यहाँ रखाना करो ताकि...  
 (मुनीर और अफ़ज्जल बाहर जाते हैं रहमत एक तरफ़ हो जाता है। नवाब मुन्ने मियाँ दाखिल होते हैं।)
- रहमत : (अलग) जो माँगे, अपने आप से बातें करते हुए।
- नवाब : (यह समझकर कि अकेले हैं) आखिर इतना गधापन कर कैसे गया? कि इस किस्म की शादी में फ़ैस गया? आजकल ये लौड़े भी बिल्कुल उल्लू के पट्ठे हैं।
- रहमत : आपका खादिम हुजूर।
- नवाब : अरे क्यों, अच्छे तो हो रहमत?
- रहमत : जी हुजूर। मेरा ख्याल है, आप अभी तक अपने बेटे ही के बारे में परेशान हैं।
- नवाब : हाँ मैं वाकई उससे बहुत नाराज़ हूँ।
- रहमत : हुजूर। ज़िंदगी तो मुसीबतों से भरी हुई है। इन्सान को हमेशा चाहिए कि वो हर मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार

रहे। हुजूर, अरसा हुआ जब मेरी मुलाकात एक बहुत ही पहुँचे हुए फकीर से हुई थी, और जो कुछ उन्होंने बताया था, मैं उसे कभी नहीं भूल सकता हूँ।

**नवाब :** क्या बताया था उन्होंने?

**रहमत :** यही, कि अगर आदमी सफर पर जाए, तो उसे पहले ही सोच लेना चाहिए, कि वो जब वापस आएगा तो उसकी हर चीज़ तबाह हो चुकी होगी, मसलन उसका घर जल चुका होगा, उसका तमाम रूपया चोरी हो गया होगा, उसके लड़के की टाँग टूट चुकी होगी। उसकी लड़की किसी आवारा आदमी के साथ भाग चुकी होगी, और इसलिए वापस आकर जो चीज़ भी उसे असली हालत में मिले उसे खुदा का शुक्र वजा लाना चाहिए। मैं अदना इन्सान अपने इस अदना फ़्लसफे पर बराबर चलता आया हूँ। और मैं जब भी घर वापस लौटता हूँ, यही उम्मीद रखता हूँ कि या तो मेरी खाल उधेड़ी जाएगी, या फिर मुझे जूते खाने पड़ेंगे। अब अगर कुछ नहीं तो एक-आध छड़ी तो पीठ पर पड़ ही जाएगी, और इसलिए अगर मैं सस्ता छूट जाता हूँ, तो खुदा का शुक्र अदा करता हूँ।

**नवाब :** यह सब ठीक है। लेकिन इस वेवक्त की शादी ने सत्यानाश कर रखा है। इसका क्या करूँ? इसी बारे में मैं अभी-अभी एक वकील के पास से मिलकर आ रहा हूँ।

**रहमत :** अरे खुदा के लिए आप वकीलों के फिकर में न पड़िये। आप जानते हैं कि यहाँ के वकील कैसे होते हैं। जहाँ तक बने किसी और तरीके से इस मुआमले को सुलझाने की कोशिश कीजिए।

**नवाब :** ठीक कहते हो। लेकिन कोई तरीका भी तो दिखाई दे।

**रहमत :** अगर आप बुरा न मानें तो मैंने एक तरीका निकाल भी लिया है। सच कहता हूँ जिस वक्त से आपको इस मुसीबत में घिरा हुआ देखा है, खाना-पीना सब छूट गया। पर यही सोचता रहा, कि आप जैसे नेक दिल इन्सान की किसी-न-किसी तरीके

से मदद करूँ।

नवाब : शुक्रिया। बहुत-बहुत शुक्रिया।

रहमत : हुजूर। मैं उस लड़की के भाई से मिला था। भाई क्या, अच्छा ख़ासा डाकू मालूम होता है। किसी का खून कर देना उसके बाएँ हाथ का खेल है। मैंने उसे काफ़ी समझाने की कोशिश की, और उसे बताया कि वजाय इस मार-धाड़ के अगर इस काम को समझदार लोगों की तरह किया जाए तो काफ़ी अच्छा है। आपकी समझदारी, लियाक़त, नेक़दिली और तारीफ़ों के मैंने पुल बाँध दिये, और मैं उसके पीछे इस बुरी तरह से हाथ धोकर पड़ गया, कि आखिरकार वह इस बात पर राज़ी हो गया कि वो कुछ रकम लेकर बहन की शादी का मामला झट से खत्म कर देगा।

नवाब : कितनी रकम चाहता है वह?

रहमत : शुरू-शुरू में तो खैर वह हद से बढ़ रहा था।

नवाब : क्या मतलब!

रहमत : मेरा मतलब है कि—अजी छोड़िए भी, इस बारे में कहना ही फ़िजूल है।

नवाब : अरे कुछ कहो तो। आखिर कितना माँगता है?

रहमत : वही बस, पाँच छः सौ रुपयों से कम नहीं।

नवाब : पाँच-छः सौ रुपये? क्या आखिर वह समझता क्या है? क्या मैं इतना उल्लू हूँ?

रहमत : जी हुजूर, बिल्कुल वही बात मैंने उससे कही। मैंने साफ इनकार कर दिया, और उसको बताया कि आप इतने भोले-भाले नहीं हैं, कि उसे पाँच-छः सौ रुपये यू ही फ़िजूल में देंगे। आखिरकार बड़ी ही हुज्जतों के बाद, वो कहने लगा वक्त आ गया है, कि अब मैं फ़ौज में भरती हो जाऊँ, और मुझे इसीलिए रुपये की सख्त ज़रूरत है, मुझे एक घोड़ा खरीदना होगा, जिसके लिए कम-से-कम साठ रुपये तो चाहिए ही।

नवाब : क्या?

- रहमत : फिर वो कहने लगा—मुझे जीन-वीन और लगाम-वगाम खरीदना होगी, जिसके लिए कम-अज़-कम बीस रुपये तो चाहिए ही।
- नवाब : साठ और बीस अस्सी हुए।
- रहमत : बिल्कुल।
- नवाब : चलो खैर, कोई बात नहीं। मिल जाएँगे अस्सी।
- रहमत : फिर वो कहने लगा मुझे नौकर के लिए भी एक टटू लेना है और उसकी कीमत कम-अज़-कम तीस रुपये होगी।
- नवाब : जहन्नुम में जावे वो, और उसका टटू। चलने दो पैदल। मैं एक कौड़ी नहीं दूँगा।
- रहमत : हुजूर।
- नवाब : नहीं वो छँटा हुआ बदमाश है।
- रहमत : क्या आप ये चाहेंगे कि उसका नौकर पैदल चले?
- नवाब : मालिक और नौकर जिस तरह चाहें चलें, मेरे ठेंगे से। मैं अदालत जाऊँगा।
- रहमत : अरे हुजूर। क्या फ़रमा रहे हैं आप? खुदा के लिए वकीलों के चक्कर में न पड़िये आप। बजाय वहाँ दौलत लुटाने के, जो कुछ ये माँग रहा है, दे दीजिए।
- नवाब : अच्छा, खैर, तीस वो भी दे दूँगा।
- रहमत : फिर वो कहने लगा—सामान लादने के लिए मुझे एक खच्चर की ज़रूरत है।
- नवाब : खच्चर गया जहन्नुम में। अब ये ज्यादती कर रहा है। मुझे अब वकील करना ही पड़ेगा।
- रहमत : खुदा के लिए हुजूर।
- नवाब : नहीं, अब मैं तय कर चुका हूँ।
- रहमत : हुजूर सिफ़र एक छोटा-सा खच्चर।
- नवाब : मैं उसे एक गधा तक नहीं दूँगा।
- रहमत : सोच लीजिए।
- नवाब : सोच लिया। मुझे अदालत जाना ही पड़ेगा।
- रहमत : अरे हुजूर, यह मत कीजिए। अब वहाँ जाकर कहाँ फ़सोगे?

जरा सोचिए तो कि आपको दिन-दिन चापलूसों से और धोखेबाजों के पंजों से गुज़रना पड़ेगा। फैसलें होंगे, अपीलें होंगी, रात-दिन का चैन हराम हो जाएगा। मामूली क्लर्कों से लेकर जजों तक सब की मुट्ठी गरम करनी पड़ेगी। और फिर भी कोई भरोसा नहीं कि वे लोग क्या से क्या कर दें। हुजूर, उनमें से जो भी चाहे मामला बिगाड़ सकता है। आप ही का वकील दूसरी तरफ जाकर आप ही का केस कहीं खराब कर दे। उलटा आप ही को कहीं फाँस न बैठे। ये भी हो सकता है कि आपका व्लर्क जो चाहे रिपोर्ट में दर्ज कर दे। अगर आपको मालूम हो गया तो वो कह देंगे कि ग़लती हो गयी। जब चाहेंगे आपके ज़रूरी काग़जात गायब कर दें। या हर चीज़ ग़लत पेश कर दें। अगर गिरते-पड़ते आप इन तमाम मुसीबतों से निकल भी गए तो मालूम होगा कि जज साहब को किसी ने आपके खिलाफ़ भड़का दिया है। फिर आप सोचेंगे कि फैसला क्या होगा? अरे हुजूर, कहाँ आप इन मुसीबतों में फँसे जा रहे हैं। अदालत में जाना तो एक किस्म की जिंदा मौत है। मैं तो उसका नाम सुनते ही काँप उठता हूँ।

नवाब : खच्चर के बारे में उसने कितना कहा था?

रहमत : हुजूर, खच्चर, उसका खुद का घोड़ा, नौकर का टट्टू, जीन, पोस्तीन और उसका थोड़ा-सा कर्ज जो कि उसे चुकाना है वो सब मिलाकर मैंने उसे दो सौ रुपये पर राज़ी किया है।

नवाब : दो सौ रुपये?

रहमत : जी।

नवाब : (गुस्से में टहलते हुए) नहीं, मैं अदालत जाऊँगा।

रहमत : सोच लीजिए।

नवाब : सोच लिया। मैं अदालत जाऊँगा।

रहमत : बिना सोचे-समझे ऐसा कदम न उठाइए।

नवाब : मैं कह चुका हूँ कि अदालत में जाऊँगा।

रहमत : लेकिन इस मुकदमाबाजी में यह तो सोचिए कि आपका खर्च

कितना हो जाएगा? आप मुकदमा दायर करेंगे, फीस देनी पड़ेगी, क्लर्कों को खिलाना पड़ेगा, वकील अपना खर्च अलग लेगा। इसके बाद रजिस्टरी होगी, उसकी फीस अलग। इसके बाद उसकी कापियाँ बनेंगी, फिर बहस-मुबाहिसे होंगे, बड़ी-बड़ी फाइलें बनेंगी, जज की फीस अलग होगी, रजिस्ट्रेशन, वारंट्स, स्टांप्स, और दुनिया भर के दूसरे झगड़े। क्लर्कों से कापियाँ बनवाना, फिर इस दौरान में जो-जो रिश्वतें आपको इधर-उधर के लोगों को देनी पड़ेंगी, वो अलग रहीं। मैं जो कहता हूँ कि आप उस आदमी को रुपये दे दें।

- नवाब : कितने? दो सौ रुपये?
- रहमत : मैं पूरा हिसाब कर चुका हूँ। अगर आप इस आदमी को दो सौ रुपये दे देंगे तो आप कम-अज़्य-कम डेढ़ सौ रुपये की बचत कर लेंगे। और फिर इन वकीलों को तो जानते ही हैं। सबके सामने अदालत के अंदर कैसे गढ़े हुए मुर्दे उखाड़ते हैं। मैं अगर आपकी जगह होता तो तीन सौ रुपये तक दे देता। लेकिन अदालत मैं क़दम नहीं रखता।
- नवाब : बकवास है। मजाल है कोई वकील मेरे खिलाफ़ कुछ कहे।
- रहमत : खैर, जैसी आपकी मर्ज़ी। लेकिन सोच लीजिए।
- नवाब : मैं हर्गिज़ दो सौ रुपये नहीं दूँगा।
- रहमत : अरे ये लीजिए आदमी खुद ही आ गया।  
(हशमत दाखिल होता है, जो डाकू के भेष में है)
- हशमत : रहमत। ये मुन्ने मियाँ किस किस्म का आदमी है?
- रहमत : क्यों, क्या बात है?
- हशमत : मैंने उड़ती-उड़ती खबर सुनी है कि वो अदालत में जाकर मेरी बहन की शादी कानूनन तुड़वाना चाहता है।
- रहमत : वो तो मुझे भी पता नहीं। लेकिन उन्होंने छः सौ रुपये देने से इनकार कर दिया है। कहने लगे—बहुत ज़्यादा हैं।
- हशमत : खून। खून। पच्चीस हज़ार खून। मेरी आँखों में खून उतर रहा है। अगर कहीं वो मेरे हथेरे चढ़ गया तो उसकी एक-एक

वोटी उसके जिस्म से उतार कर एक तागे में पिरो कर पेड़ पर सूखने के लिए लटका दूँगा। चाहे फिर मुझे फाँसी के तख्ते पर ही क्यों न चढ़ना पड़े। (नवाब मुन्ने मियाँ बुरी तरह काँप रहे हैं और रहमत के पीछे छुपने की कोशिश करते हैं।)

रहमत : नवाब मुन्ने मियाँ कोई मामूली हस्ती नहीं हैं, वो इन गीदड़ भभकियों में नहीं आने वाले।

हशमत : क्या बकता है? उफ, शायद मैं गुस्से से पागल हो जाऊँगा। अगर कहीं इस वक्त वो यहाँ मौजूद होता तो मेरी यह तलवार उसके जिस्म के पार होती। (नवाब साहब को देखकर) यह कौन है?

रहमत : यह वो नहीं है हुजूर, यह वो नहीं है।

हशमत : तो फिर शायद उसका कोई दोस्त है।

रहमत : जी नहीं हुजूर, बल्कि यह तो उसके सबसे बड़े दुश्मन हैं।

हशमत : सबसे बड़े दुश्मन?

रहमत : जी?

हशमत : तुम उस लुच्चे नवाब मुन्ने मियाँ के वाकई दुश्मन हो?

रहमत : मुझसे बात कीजिए न।

हशमत : (बुरी तरह नवाब साहब से हाथ मिलाते हुए) मुझे आप जैसे मर्द आदमी से हाथ मिलाते हुए बड़ी खुशी हो रही है। जनाब आला मैं अपनी इस तलवार पर हाथ रख कर क़सम खाता हूँ कि शाम होने तक मैं आपका इस बदमाश और लफ़ंगे मुन्ने मियाँ से पीछा छुड़ा दूँगा।

रहमत : लेकिन हुजूर। इस किस्म की हरकतें खिलाफे कानून हैं।

हशमत : बकवास। देखें कोई क्या बिगाड़ लेता है मेरा। ज़रा छू कर तो देखें।

रहमत : लेकिन इससे निपटना आसान नहीं है। उसके साथ हमेशा उसके दोस्तएहसाब और नौकर रहते हैं।

हशमत : अच्छा है, और मज़ा आ जाएगा। उसको तो मैं चूहे की मौत मारूँगा। (तलवार निकालते हुए) आ जा सामने। देखता हूँ

तू कितने साथी लेकर आया है। एक-एक को कुत्ते की मौत मारूँगा। बढ़ते क्यों नहीं? यह बात है...यह बात...(आगे बढ़-बढ़ कर तलवार इस तरह चलाता है जैसे कि कई लोगों से तलवार लड़ा रहा है) शावाश लेकिन सम्हालो, जहन्नुम तक पीछा नहीं छोड़ूँगा। यह ले, यह ले। कहाँ भागता है। अब बचके कहाँ जाओगे? बुजदिल कमीने तू भी लिए जा, क्या याद करेगा कि किसी मर्द से पाला पड़ा है। अबे वहाँ कहाँ हट रहा है? तू भी चखेगा।

रहमत : अरे अरे हुजूर? लेकिन हम इस टोली में नहीं हैं।

हशमत : देख लूँगा, बोटियाँ काट कर सूखने के लिए डाल दूँगा। (जाता है)

रहमत : देख लिया आपने हुजूर? सिर्फ दो सौ रुपये के लिए इतने आदमियों का खून ख़राबा होगा। इजाज़त दीजिए, मैं चलता हूँ।

नवाब : (काँपते हुए) रहमत।

रहमत : जी।

नवाब : मैं उसे दो सौ रुपये देने के लिए तैयार हूँ।

रहमत : शुक्र है, आप समझे तो।

नवाब : चलो और उसे ढूँढ़ लो। पैसे मेरे पास ही हैं।

रहमत : आप ऐसा कीजिए, वो रुपये मुझे दे दीजिए, मैं उस तक पहुँचा दूँगा। आपका वहाँ जाना ठीक नहीं है। अभी-अभी तो हमने उसे बताया था कि आप कोई और हैं। इसमें आपकी इज़ज़त का सवाल है। दूसरी बात यह कि हो सकता है, अगर आप उसके सामने जाएँ तो उसकी नीयत ख़राब हो जाए। और बजाय दो सौ के कुछ ज्यादा माँगे।

नवाब : जाओ।

रहमत : क्यूँ क्या, आपको भरोसा नहीं है मुझ पर?

नवाब : हाँ हाँ, लेकिन।

रहमत : बहुत अच्छा। तो या तो मैं बदमाश हूँ या ईमानदार हूँ। इन

दोनों में से कोई एक ही हूँगा। पहले आप यह बताइए कि आपको धोखा देकर मुझे क्या मिलेगा? मैं तो सिर्फ आप और आपके बेटे की खिदमत करता आया हूँ। लेकिन अगर आपको मुझ पर भरोसा नहीं है तो फिर मैं फौरन इस मामले से हट जाता हूँ। आप किसी और का बंदोबस्त कर लीजिए।

**नवाब :** (रुपये देते हुए) अजी अजी यह भी क्या बात हुई। यह लो रुपये।

**रहमत :** जी नहीं। रुपयों का भरोसा मुझ पर न कीजिए तो बेहतर है। किसी और को दे दीजिए।

**नवाब :** अजी अब लो भी।

**रहमत :** जी नहीं, न कीजिए भरोसा, आपको क्या मालूम हो सकता है मैं ये रुपये खा आऊँ।

**नवाब :** क्या फ़जूल बात है जी। अब रखो भी। खामखा बहस किए जा रहे हो। लेकिन उससे इन रुपयों की रसीद लेना न भूलना।

**रहमत :** वो छोड़ दीजिए मुझ पर। मैं इतना बेवकूफ़ नहीं हूँ।

**नवाब :** तो मैं तुम्हारा घर पर इन्तजार करूँगा।

**रहमत :** बस, आँख झपकते ही मैं वहाँ पहुँचता हूँ। (नवाब जाते हैं) चलो एक तो तय हुआ। अब दूसरे की बारी है। अरे, ये लो उनकी कमबख्ती भी उन्हें खींच ले आ रही है। खैर, किस्मत का लिखा कौन मिटा सकता है? गीदड़ की मौत आती है तो शहर की तरफ भागता है।

(नवाब बन्ने मियाँ दाखिल होते हैं)

**रहमत :** (जैसे कि उन्हें देखा न हो) ओ खुदाया, आखिर ये मुसीबत के पहाड़ इस बेचारे नवाब बन्ने मियाँ ही पर क्यों टूट रहे हैं? उफ् बदकिस्मत बाप। अब तू इस मुसीबत से कैसे छूटेगा?

**बन्ने मियाँ :** (अलग से) हैं, यह क्या? यह रोती शक्ल बनाए हुए मेरे बारे में क्या कह रहा है।

**रहमत :** (उसी तरह) क्या मुझे ये कोई नहीं बताएगा कि मैं आखिर नवाब बन्ने साहब को कहाँ पा सकूँ?

नवाब : क्या रहमत, क्या बात है?

रहमत : (इधर-उधर स्टेज पर दौड़ता है, जैसे कि नवाब को देखा ही नहीं) आखिर मैं उन्हें ढूँढ़ू तो कहाँ ढूँढ़ू? यह दिल तोड़ने वाली खबर आखिर मैं उन तक कैसे पहुँचाऊँ?

नवाब : (उसके पीछे भागते हुए) अरे आखिर बात क्या है? कुछ कहो तो।

रहमत : (उसी तरह) शहर भर छान मारा, मगर उनका कहीं पता नहीं।

नवाब : अरे यहाँ तो हूँ। यह देखो।

रहमत : (उसी तरह) वो शायद जरूर कहीं न कहीं जाकर छिप गए हैं, जभी तो नहीं मिल रहे हैं।

नवाब : (उसको पकड़ते हुए) आहिस्ता-आहिस्ता, अबे क्या अंधे हो गए हो, जो मैं तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा हूँ।

रहमत : अरे हुजूर, दुनिया भर में आपको ढूँढ़ मारा।

नवाब : और मैं आधे घंटे से तुम्हारे सामने झक मार रहा हूँ। आखिर बात क्या है?

रहमत : हुजूर।

नवाब : क्या?

रहमत : हुजूर आपका बेटा।

नवाब : हाँ, हाँ मेरा बेटा।

रहमत : हुजूर वो एक बहुत ही खौफ़नाक मुसीबत में फ़ँस गया है।

नवाब : क्या?

रहमत : अभी दो घंटे पहले मेरी मुलाकात आपके बेटे से हो गयी, जो कि निहायत ग़मगीन दिखाई दे रहा था। शायद आपने उससे कुछ कह दिया था। मैंने कहा—लाओ ज़रा उसका दिल बहलाने के लिए इसे बंदरगाह की हवाखोरी करा लाऊँ। वहाँ पहुँच कर हमारी नज़र एक छोटी-सी खूबसूरत किश्ती पर पड़ी। यह किश्ती किसी तुर्की की थी। जल्द ही हमारी मुलाकात उस तुर्की से भी हो गयी। आदमी काफ़ी हसीन था, दो-चार मिनट ही बातें करने के बाद वह हमें अपनी किश्ती पर ले

गया। अन्दर ले जाकर उसने हमारी काफ़ी आवभगत की और दुनिया भर की खाने-पीने की चीज़ें हमारे सामने लाकर ढेर कर दीं।

**नवाब :** तो इसमें आखिर खतरे की कौन-सी बात है?

**रहमत :** हुजूर, मैं वहीं पर आ रहा हूँ अभी। खाते वक्त उसने किश्ती चलाने का हुक्म दिया। जब वो काफ़ी दूर समुद्र में पहुँच गई तो उसने मुझे एक नाव में जबरदस्ती बिठा कर डंगी से उतार दिया और आपसे यह कहने को कहा है कि अगर आपने फौरन पाँच सौ रुपये न भेजे तो वह आपके लड़के को फौरन अल्जेरिया ले जाकर गुलाम बनाकर बेच डालेगा।

**नवाब :** पाँच सौ रुपये। शैतानियत की हद है।

**रहमत :** और उस पर तुरा यह कि उसने, मुझे सिर्फ़ दो घंटों की मोहल्त दी है।

**नवाब :** बदमाश कहीं का। एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी।

**रहमत :** लेकिन बेटे की मोहब्बत आपको ये करने तक मजबूर कर ही देगी। जल्दी कीजिए वक्त बिल्कुल नहीं है।

**नवाब :** लेकिन वो वहाँ उस किश्ती पर मरने गया ही क्यूँ था?

**रहमत :** हुजूर उसे ख्वाब में भी ख्याल नहीं था कि यूँ होगा।

**नवाब :** रहमत, फौरन उस तुर्की के पास जाओ और उसे कहो कि मैं कानून का दरवाजा खटखटाऊँगा।

**रहमत :** कानून और बीच समंदर में? आप शायद मज़ाक कर रहे हैं हुजूर।

**नवाब :** लेकिन वो वहाँ उस किश्ती पर मरने गया ही क्यों था?

**रहमत :** हुजूर, वाज़ वक्त इन्सान की किस्मत ही ख़राब हो जाती है।

**नवाब :** रहमत वक्त आ गया है कि तुम इस वक्त अपनी नमक हलाली साबित करो।

**रहमत :** लेकिन कैसे हुजूर?

**नवाब :** तुम फौरन जाकर उस तुर्की से कहो कि मेरे बेटे को छोड़ दे, और जब तक मैं रुपया जमा करता हूँ, उस वक्त तक

वह मेरे बेटे के बजाय तुम को अपने कब्जे में रखे।

रहमत : क्या फ़रमा रहे हैं, हुजूर? आप समझते हैं कि वह तुर्की इतना बेवकूफ़ है, कि आपके बेटे को छोड़ कर मुझ जैसे दो कौड़ी के आदमी को कबूल कर लेगा।

नवाब : लेकिन वो वहाँ किश्ती पर मरने गया ही क्यूँ था?

रहमत : हुजूर उसे क्या पता था कि यह होगा? याद रखिए मुझे सिर्फ़ दो घंटे की मोहल्लत दी गयी है हुजूर।

नवाब : कितना कहा था तुमने?

रहमत : पाँच सौ रुपये।

नवाब : पाँच सौ रुपये ? क्या उसका ज़मीर मलामत नहीं करता है?

रहमत : करता तो होगा हुजूर, लेकिन एक तुर्की ज़मीर जो ठहरा।

नवाब : इसे पता है कि पाँच सौ रुपये होते क्या हैं?

रहमत : जी हाँ हुजूर।

नवाब : क्या वो बदमाश यह समझता है कि रुपये पेड़ों पर उगते हैं।

रहमत : हुजूर, उन लोगों से अक्ल की बात की उम्मीद रखना फ़िजूल है।

नवाब : लेकिन वो उस किश्ती पर मरने गया ही क्यों था?

रहमत : सही फ़रमाते हैं आप, लेकिन इस मुसीबत को देखा ही किसने था? जल्दी कीजिए हुजूर, वक्त बिल्कुल नहीं है।

नवाब : बहुत अच्छा, यह रही मेरे कपाट की चाबी। (चाबी देता है)

रहमत : जी हाँ।

नवाब : उसको खोलो।

रहमत : जी।

नवाब : बाएँ तरफ एक और चाबी रखी हुई मिलेगी, वह अंदर के हिस्से की चाबी है।

रहमत : जी हाँ, जी हाँ।

नवाब : उसमें मेरे पुराने कपड़े फैले पड़े हैं। वो जाकर किसी कबाड़ी की दुकान पर बेच डालो, और उन पैसों से मेरे बेटे को छुड़ा लाओ।

रहमत : (चाबी वापस करते हुए) हुजूर, आपको हो क्या गया है? मुझे इसके पाँच रूपये भी नहीं मिलेंगे। और फिर आप जानते ही हैं कि वक्त बिल्कुल कम है।

नवाब : लेकिन वो उस किश्ती पर मरने गया ही क्यों था?

रहमत : उफ्। वही तोते की रट। और आप इस किश्ती को भूल जाइये कुछ देर के लिए। यह सोचिए कि वक्त कितना कम रह गया है। (रोना शुरू करता है) उफ् मेरे बेचारे आपा पर न मालूम क्या बीत रही होगी। शायद वो कहीं अल्जेरिया के लिए चल न पड़े। लेकिन ऐ खुदा, तू मेरा गवाह है जो मैंने उसे बचाने की कोई कसर नहीं छोड़ी। अगर वह कहीं बच न पाया तो मैं क्यामत के रोज़ उसके वालिदे बुजुर्गवार को कुसूरवार ठहराऊँगा।

नवाब : रहमत तुम यहीं ठहरो, मैं जाकर रुपये ले आता हूँ।

रहमत : तो फिर जल्दी कीजिए हुजूर, मैं तो घड़ी का ख्याल करके ही काँप उठता हूँ।

नवाब : कितने कहे थे तुमने? चार सौ?

रहमत : जी नहीं—पाँच सौ रुपये।

नवाब : पाँच सौ रुपये।

रहमत : जी।

नवाब : लेकिन वो उस किश्ती पर मरने गया ही क्यों था?

रहमत : अरे हुजूर जल्दी कीजिए।

नवाब : क्या कोई और जगह नहीं मिली घूमने के लिए।

रहमत : जल्दी कीजिए हुजूर, जल्दी।

नवाब : उस किश्ती का बुरा हो।

रहमत : (अलग) मालूम होता है किश्ती इसके हल्क में फँस कर रह गई है।

नवाब : ठहरो रहमत, मैं भूल ही गया था कि मुझे अभी-अभी इतनी रकम गिनियों की सूरत में मिली है, लेकिन किसे मालूम था, कि इतनी जल्दी इसे हाथ से खोना पड़ेगा। (जेब से थैली

निकालता है और रहमत की तरफ बढ़ाता है) ये लो, और जाकर मेरे बेटे को फौरन छुड़ा लाओ।

रहमत : (हाथ बढ़ाते हुए) लाइए जल्दी कीजिए हुजूर।

नवाब : (थैली पीछे करते हुए) लेकिन उस तुर्की के बच्चे से कह देना कि वह एक नंबर का बदमाश है।

रहमत : (पहले की तरह) जी हाँ।

नवाब : एक ज़लील कुत्ता है।

रहमत : जी हाँ, जी हाँ।

नवाब : एक चोर और गिरहकट।

रहमत : और उसे कह दूँगा।

नवाब : और उसे यह भी कह देना कि मुझसे ये रुपये लेकर उसने निहायत ही ज़लालत का सबूत दिया है।

रहमत : जी हाँ।

नवाब : और यह कि मैं उसे ये रुपये सिर्फ़ कर्ज़ के तौर पर दे रहा हूँ।

रहमत : जी हाँ, जी हाँ।

नवाब : (थैली को वापस जेब में रखते हुए) तो तुम फौरन यहाँ से रवाना हो जाओ और जाकर मेरे बेटे को ले आओ।

रहमत : (उसके पीछे भागते हुए) लेकिन हुजूर।

नवाब : क्या बात है?

रहमत : हुजूर वो रुपये कहाँ हैं?

नवाब : मैंने तुम्हें दिए नहीं ?

रहमत : जी नहीं, आपने तो वो वापस जेब में रख लिए हैं।

नवाब : (रुपये देते हुए) ग़्रम और फिक्र की वजह से मेरा दिमाग़ बेकाबू हो गया है।

रहमत : वो तो साफ़ ज़ाहिर है।

नवाब : लेकिन वो वहाँ उस किश्ती पर मरने गया ही क्यों था? जहन्नुम में जाए वो किश्ती और उसके साथ-साथ वो तुर्की भी। तबाह करके रख दिया। (जाता है)

रहमत : पाँच सौ रुपये देना क्या पड़े कि जान निकल गयी। लेकिन मुझे तो अभी इस झूठ का बदला लेना है, जो कि उसने अपने बेटे से मेरे बारे में कहा है।

(मुनीर और अफ़ज़ल दाखिल होते हैं)

मुनीर : क्यों रहमत कामयाब हुए कि नहीं।

अफ़ज़ल : कुछ किया मेरे लिए?

रहमत : (मुनीर से) यह रहे दो सौ रुपये जो कि मैंने तुम्हारे अव्या हुजूर से निकलवाये हैं। (रुपये देता है)

मुनीर : जीते रहो।

रहमत : (अफ़ज़ल से) और तुम्हारे लिए—मुझे अफ़सोस है कि मैं कुछ न कर सका।

अफ़ज़ल : (वापस जाते हुए) तो फिर मैं जाकर झूब मरता हूँ।

रहमत : अरे, अरे, अरे। सुनो तो। इतनी जल्दी भी किस काम की?

अफ़ज़ल : (वापस लौटते हुए) क्या है?

रहमत : तुम्हारा काम भी मैंने कर दिया है।

अफ़ज़ल : सच? ओह रहमत, तुमने दोबारा मुझे ज़िंदगी दी।

रहमत : लेकिन इस शर्त पर कि तुम्हारे वालिद ने जो मुझ पर झूठों तोहमत लगायी थी, उसका मैं जिस तरह चाहूँ बदला ले तूँ।

अफ़ज़ल : हाँ, हाँ, तुम्हें पूरी इजाज़त है।

रहमत : तुम, मुनीर के सामने वादा करते हो?

अफ़ज़ल : हाँ भाई, वादा करता हूँ।

रहमत : (रुपये देते हुए) तो यह लो फिर। यह रहे पाँच सौ रुपये।

अफ़ज़ल : तो जाओ फिर चलकर नीली को छुड़ा लायें।

(पर्दा गिरता है।)

## तीसरा अंक

(नीली, रजिया, रहमत, और हशमत दाखिल होते हैं।)

हशमत : आपके होने वालों की यही ख्वाहिश है, कि आप दोनों को एक मकान में ठहराया जाए, हम तो सिफ़ उनका हुक्म पूरा कर रहे हैं।

रजिया : मैं खुद यही चाहती हूँ कि हम दोनों साथ में रहें और एक-दूसरे के दुख-दर्द में शरीक होकर एक-दूसरे को ज्यादा-से-ज्यादा पहचानने की कोशिश करें। हो सकता है, कि हम दोनों की मोहब्बत उन दोनों को और भी करीब ले आए।

नीली : मैं आपकी इस साफ दिली का शुक्रिया अदा करता हूँ, और मैं खुद भी अपना हाथ आपकी तरफ साफ़ दिली से बढ़ाती हूँ।

हशमत : लेकिन जो हाथ मोहब्बत में बढ़ाया गया है, उस बारे में आपकी क्या राय है।

नीली : मोहब्बत? वह एक दूसरी ही चीज़ है वहाँ जितने ही ज्यादा ख़तरात बढ़ते जाते हैं, उतनी ही ज्यादा मुझमें उनसे मुकाबला करने की हिम्मत बढ़ती जाती है।

रहमत : जी हाँ, यही मेरे आका का भी हाल है, जो कुछ उन्होंने आपके लिए किया है उसे देखते हुए तो कम-से-कम आपको यही चाहिए, आप भी उनके साथ उसी मोहब्बत और नरम दिली से पेश आएँ।

**नीली :** मुझे अब भी उन पर पूरा भरोसा नहीं है। उन्होंने जो कुछ भी मेरे लिए किया है, मुझे इतमीनान दिलाने के लिए काफ़ी नहीं है। हो सकता है कि लोगों में मैं काफ़ी हँसमुख नज़र आती हूँ। हालाँकि मैं भी इन्हीं ख्यालात की रौ में इब करन जाने कहाँ पहुँच जाती हूँ, अगर आपके आका यह समझ रहे हैं कि उन्होंने रुपया चुका कर मुझे वहाँ से बचा लिया है, तो शायद आप ग़लती पर हैं। (क्योंकि इस दुनियां में रुपया ही हर चीज़ नहीं है) मैं उनकी मोहब्बत का इम्तिहान अपने तरीके पर करना चाहती हूँ अगर वो इस इम्तिहान में पूरे उतरे तो बाखुशी उनकी मोहब्बत का जवाब मोहब्बत से ढूँगी।

**रहमत :** अरे लेकिन वही तो उनका भी कहना है। उन्होंने मुझे आपकी खिदमत में इसलिए भेजा है कि मैं उनके लिए आपसे शादी की दरखास्त करूँ, और आप पर यह ज़ाहिर कर दूँ कि वो आपकी कितनी इज़्ज़त करते हैं। अगर यह बात न होती तो क्या आप यह समझती हैं कि मैं उनका इस किस्म के मामले में कभी भी साथ देता?

**नीली :** चूँकि आप यह कह रहे हैं इसलिए मैं मानने को तैयार हूँ, लेकिन मुझे उम्मीद नहीं है कि उनके अब्बा हुजूर इस बात को मानने के लिए तैयार हो जाएँ।

**रहमत :** घबराइए नहीं उसका भी कोई-न-कोई तरीका निकाल लेंगे।

**रज़िया :** (नीली से) शायद यही वजह है कि जो कि हम दोनों को और करीब ले आएगी, लेकिन जो खतरा आपको है वही मुझे भी है।

**नीली :** फिर भी अगर देखा जाए तो आप मुझसे ज्यादा बेहतर हालात में हैं, आपको कम-अज़-कम यह तो मालूम है कि आप किसकी बेटी हैं, सिफ़र खानदान मालूम होने की देर है, फिर आपकी शादी जो कि हो तो चुकी है, उसके बारे में भी सबको खुल्लम-खुल्ला मालूम हो ही जाए और उस वक्त किसी को एतराज का मौका भी नहीं रहेगा। लेकिन आफ़त तो मेरी है।

किसी को क्या बताऊँ कि किसकी बेटी हूँ और फिर साबका (पाला) ऐसे बाप से आ पड़ा है, जिसे सिवाय रुपयों के इस दुनियाँ में किसी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं है।

**रजिया :** लेकिन कम-अज़-कम आपके सामने इस चीज़ का तो ख़तरा नहीं है कि जिस शख्स से आपकी शादी हो रही है, उसके लिए दूसरी लड़की भी ढूँढ़ने की कोशिश की जा रही है।

**नीली :** अरे हाँ रहमत, उस बुड्ढे-खूसट-मक्खीचूस का किस्सा तो सुनाओ, जिससे तुमने रुपये ऐंठे थे, ये तो तुम जानते हो, कि मैं इस किस्म के किस्सों पर जान देती हूँ।

**रहमत :** मेरी बजाय हशमत आपको वो किस्सा सुना देगा, मैं इस वक्त एक अपनी फिक्र में लगा हुआ हूँ, मुझे अपना एक छोटा-सा बदला लेना है, और मैं, इसकी तरकीबें सोच रहा हूँ।

**हशमत :** अब कौन-सी नयी हरकत करने वाले हो?

**रहमत :** वजह?

**हशमत :** इसलिए कि मैं देख रहा हूँ कि आप अपनी खाल उधड़वाने की फिक्र में हैं।

**रहमत :** खैर, खाल मेरी उधड़ेगी न? आपकी तो नहीं?

**हशमत :** ठीक है, अपनी खाल के तुम्हीं मालिक हो जो चाहे करो उसके साथ।

**रहमत :** मैं इन ख़तरों से भागने वाला नहीं हूँ। मैं तो सिर्फ उन लोगों से दूर भागता हूँ जो कि इतने कमजोर दिल के होते हैं कि हर कदम फूँक-फूँक कर उठाते हैं, कहीं ऐसा न हो कि फ़ैस जाऊँ (नीली और रजिया से) जाइये, मैं सब ठीक-ठाक कर लूँगा, अब आप लोग जाकर आराम कीजिए, मैं जल्द ही आपकी खिदमत में हाजिर होऊँगा।

(हशमत, रजिया और नीली चले जाते हैं; उनके जाने पर नवाब बन्ने मियाँ दाखिल होते हैं।)

**नवाब :** अजी खूब मिले रहमत, कहो भाई मेरे बेटे के बारे में क्या

किया तुमने ?

रहमत : आपका बेटा, हुजूर अब किसी ख़तरे में नहीं है लेकिन हुजूर, ख़तरे में आप धिरे हुए हैं, और मैं तो इसी सोच में हूँ कि आपको सही-सलामत घर किस तरह पहुँचाऊँ ।

नवाब : क्यों, क्या मतलब है तुम्हारा ?

रहमत : इसी लमहे वो आपको चारों तरफ ढूँढ़ने की कोशिश में लगे हुए हैं ।

नवाब : मुझे ?

रहमत : जी ।

नवाब : लेकिन वो हैं कौन ?

रहमत : आपको याद होगा, जिस लड़की से मुनीर ने शादी की है, उसका एक भाई है उसे किसी-न-किसी तरह यह पता चल गया है कि आप उसकी बहन की शादी मन्सूख करने की कोशिश में हैं ताकि आपकी बेटी की शादी मुनीर से हो जाए । इस वक्त उसके सामने भी इज्ज़त का सवाल पैदा हो गया है और वो इसीलिए इन्तकाम की आग में जल रहा है । उसके तमाम दोस्त अहबाब, जो कि उसी तरह खतरनाक और डाकू मालूम होते हैं, तलवारें और डंडे वगैरा लिए हुए आपकी तलाश में सगर्दा हैं, आपके मकान के पहुँचने के सारे रास्ते उन्होंने बंद कर दिए हैं, ताकि आप किसी तरीके से मकान तक न पहुँच सकें और कहीं-न-कहीं रास्ते में ही धर लिए जाएँ, वो सड़कों पर राह चलते आदमी को रोककर आपका पता पूछ रहे हैं ।

नवाब : अरे तो बर्खुदार कोई तरकीब बताओ बचने की ।

रहमत : मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ, सोच-सोच कर ही होश उड़े जाते हैं, आपकी हालत देखकर वाकई मुझे-ठहरो, यह आवाज़ कैसी है ।  
(पीछे जाकर इधर-उधर झाँकता है ताकि मालूम हो कि कोई आ तो नहीं रहा है ।)

- नवाब : (कॉप्टे हुए) क्या है?
- रहमत : (वापस आते हुए) नहीं कुछ नहीं है।
- नवाब : अजी कुछ तो तरीका निकालो बचने का।
- रहमत : एक तरीका है। लेकिन वो करने में मुझे खुद अपनी जान का ख़तरा है।
- नवाब : रहमत, यही मौका है, तुम्हें अपने आपको एक नमक हलाल नौकर सावित करने का! मैं हाथ जोड़ता हूँ बचा लो मुझे।
- रहमत : मैं खुद यही सोच रहा हूँ। भला मैं आपको यूँ मुसीबत में घिरा हुआ कैसे छोड़ सकता हूँ। पता नहीं क्या वजह है आपके लिए मेरे दिल में एक अजीब जज्बा और मोहब्बत है।
- नवाब : तुम्हें इनाम भी ऐसा दूँगा कि कभी नहीं भूलोगे, कुछ दिन इस्तेमाल करने के बाद मैं ये कपड़े तुम्हें दे दूँगा।
- रहमत : सुनिए, यह है मेरी तरकीब जो मैंने सोच रखी है, आप इस बोरे में छुप जाइए और...
- नवाब : (चौंक कर) उफ्, यह आवाज़ कैसी थी?
- रहमत : जी कुछ नहीं, घबराइये नहीं, कोई नहीं है। हाँ, तो मेरी स्कीम यह है कि आप इस बोरे में घुस जाइए, मैं आपको पीठ पर लाद कर निहायत ही इतमीनान से दरवाज़े बंद करके इन बदमाशों के दरम्यान से गुज़रता हुआ घर पहुँच जाऊँगा। एक मर्तबा घर खैरियत से पहुँच गए तो फिर इतमीनान से दरवाज़े बंद करके इन बदमाशों की खबर लेने के लिए कोई-न-कोई तरीका निकाल सकते हैं।
- नवाब : हाँ, बात तो ठीक है।
- रहमत : ठीक है! अरे हुजूर इससे बेहतर कोई तरीका हो ही नहीं सकता, अभी आपको मालूम हो जाएगा। (अलग) इस झूठ का बदला तो ऐसा निकालूँगा कि मियाँ जी ज़िंदगी भर न भूलेंगे।
- नवाब : क्या कहा तुमने?
- रहमत : मैं यह कह रहा था हुजूर कि आपके दुश्मनों की ऐसी खबर लूँगा कि ज़िंदगी भर नहीं भूलेंगे। खुदा के लिए अब इसमें

आ जाइए, और देखिए। कुछ भी हो जाए, हिलिये-विलियेगा नहीं।

नवाब : फिकर न करो, साँस तक रोक लूँगा।

रहमत : आइये ज़रा जल्दी।

(नवाब साहब बोरे के अंदर गायब हो जाते हैं)

रहमत : वो रहा एक कातिल गला-काट, आपको ही ढूँढ़ता फिर रहा है। (उसकी आवाज़ बनाकर) 'क्यों कोई ऐसा शख्स नहीं, जो मुझे नवाब बन्ने मियाँ का पता बता दे? ताकि मैं दुनिया को उसके वजूद से पाक कर दूँ।' (असली आवाज़ में) बिल्कुल न हिलिए (जो जुमले आगाज़ में हैं वो आवाज़ बनाकर कहे गए हैं, और बाकी यूँ ही असली आवाज़ में हैं) 'मच्छर कहीं का, अगर वो पाताल में भी जाकर छिप गया है तो मैं वहाँ से भी उसे ढूँढ़ निकालूँगा' छिपाये रखिये अपने आपको, 'वो बोरे वाले' जी, 'मैं तुझे एक रूपिया इनाम दूँगा, अगर तू मुझे उस नवाब बन्ने मियाँ का पता बता देगा।' आप नवाब बन्ने मियाँ को ढूँढ़ रहे हैं? 'हाँ' और नहीं तो क्या मैं उसके फरिश्तों को ढूँढ़ रहा हूँ। लेकिन हुजूर किसलिए? 'जी हुजूर इसलिए कि उसकी शामत आ चुकी है, मैं उसकी खाल उधेड़ कर भूसा भर दूँगा।' लेकिन हुजूर, आप उनके साथ इस किस्म का बर्ताव कैसे कर सकते हैं। वो तो एक निहायत ही शरीफ और ईमानदार आदमी हैं। 'क्या कहा?' अबे बता तेरी भी शामत आ गई है? मैं तो सिर्फ एक शरीफ और इज्ज़तदार आदमी का साथ दे रहा हूँ, और बस। 'तो शायद तू उसका दोस्त है।' जी हाँ हुजूर, मुझे यह सर्फ हासिल है। 'सर्फ का बच्चा तो पहले मैं तेरी खाल उतारता हूँ, मुझसे ज़बान चलाता है।' ये ले, ये ले, उफ ओ, मार डाला, रहम कीजिए हुजूर, आहिस्ता आहिस्ता ओह, ओह, जा उससे जाकर कह दे, कि इसका हश्र उससे भी बुरा होगा। खुदा समझे इससे, हड्डी तोड़ दी, ओह-ह-ह-ह-ह।

- नवाब : (गर्दन निकालते हुए) उफ्फ रहमत, अब मुझसे इससे ज्यादा नहीं सहा जाएगा।
- रहमत : ओह, हुजूर, मेरे कन्धे को मालूम होता है, फोड़े बन गए हैं।
- नवाब : क्या, कन्धे पर तो वो मेरे मार रहा था।
- रहमत : जी नहीं हुजूर मेरे।
- नवाब : क्या बकते हो जी, सारा कन्धा मालूम हो रहा है, बाहर आ जाएगा।
- रहमत : आपको तो सिर्फ डंडे की चोट लगी थी।
- नवाब : हाँ तुमसे इतना भी न हुआ, कि बोरे से ज़रा हट कर खड़े होते ताकि कम-अज़-कम मैं तो बच जाता।
- रहमत : (उसका सिर बोरे के अंदर ठूँसते हुए) अरे बच गए बोलो। दूसरी मुसीबत आ रही है, शक्ल तो वर्डी भयानक मालूम हो रही है, किसी जंगल का पकड़ा मालूम होता है। ‘मेरा आधा दिन यूँ ही बरबाद हो गया, लेकिन पता नहीं नवाब बन्ने मियाँ कमबख्त कहाँ जाकर गुम हो गया है।’ सर अंदर रखिए। ‘हाँ-आ,—आओ इस आदमी से पूछ लूँ, शायद इसे पता हो, क्यों मैं एक नवाब बन्ने मियाँ नाम के आदमी को ढूँढ रहा हूँ। पता है वो कहाँ मिल सकेगा?’ ‘जी नहीं हुजूर मुझे बिल्कुल पता नहीं।’ ‘घबराओ नहीं मैं कुछ नहीं करूँगा, सिर्फ उसे ज़रा इस छड़ी का मज़ा चखाऊँगा।’ यकीन रखिए हुजूर, मुझे बिल्कुल पता नहीं, ‘लेकिन ये बोरे में अभी कुछ हिला’, जी नहीं कुछ नहीं है हुजूर, ‘ठहरो मैं ज़रा अपनी तलवार को इस बोरे के पार करके देखता हूँ।’ नहीं-नहीं मेहरबानी कीजिए। तो फिर दिखा वो खोल कर क्या है? जी नहीं हुजूर। जी नहीं है। आपको मेरी चीज़ देखने का कोई हक नहीं है। ‘लेकिन मुझे देखना है।’ ‘मैं नहीं दिखाऊँगा’ ज़रूर कुछ-न-कुछ है इसके अन्दर। कुछ नहीं है, सिर्फ मेरे पुराने कपड़े हैं। ‘दिखाओ तो’ जी नहीं, ‘नहीं दिखाओगे।’ जी नहीं। ‘तो लो फिर मैं तुम्हारी पीठ का इलाज करता हूँ।’ मैं इन गीदड़ भभकियों से डरने

वाला नहीं हूँ। 'मेरा मजाक उड़ा रहे हो?' (नवाब साहब को बोरे के अंदर बुरी तरह टूँसता है) ओह? हुजूर-हुजूर ओह, ओह।

**नवाब :** उफ् ज़ालिम (सर बाहर निकालते हुए) हड्डियाँ-पसलियाँ सब एक कर दीं।

**रहमत :** उफ् मैं तो अधमरा हो गया।

**नवाब :** उफ् यह कंबख्त मेरी क्यों मरम्मत कर रहे हैं?

**रहमत :** (उनका सर अंदर टूँसता है) होशियार, मार डाला अबकी मर्तबा पाँच-छः आदमियों का गोल आ रहा है। (उसी तरह की नकल उतारता है, जैसे कि अलग-अलग आदमी बोल रहे हों) 'चलो जल्दी आओ, इस नवाब बन्ने मियाँ के बच्चे को ढूँढ़ निकालना ही है। हर तरफ़ देखते रहो, कोना-कोना छान मारो, पूरा शहर पड़ा हुआ है। अगर वक़्त पड़े तो दरवाज़े को तोड़कर अंदर भी जाओ, कमरा-कमरा देख मारो, क्या ख्याल है? किस तरफ होगा? उस तरफ? नहीं इस तरफ, बायीं तरफ, दायीं तरफ? नहीं-नहीं, हाँ-हाँ, अन्दर ही रहिये।' अरे वो इसका नौकर है आओ उसे पूछें क्यों वे तेरा आका कहाँ है? ओह हुजूर मारिये मत, 'चलो जल्दी बताओ, कहाँ है वो? बताओ जल्दी, अबे जुबान नहीं है क्या? बोलता कुछ नहीं बोला' ओह हुजूर सम्हल के। (नवाब बन्ने मियाँ चुपचाप अपना सिर बोरे में से बाहर निकाल कर रहमत का ये सब खेल देख रहे हैं)

**रहमत :** (बगैर उन्हें देखे हुए अपना खेल जारी रखता है) 'अरे अगर तूने अपने मालिक का पता नहीं बताया तो तेरी इतनी पिटाई होगी कि ज़िंदगी भर न भूलेगा।' आप चाहे जो कर सकते हैं करें, लेकिन मैं अपने मालिक से दग़ाबाज़ी नहीं करूँगा। 'तो फिर हम तेरी चमड़ी उतारते हैं,' 'परवाह नहीं' तो तू पिटना चाहता है। मैं अपने मालिक को धोखा नहीं दूँगा। तो फिर तेरा इलाज शुरू करना पड़ेगा, ये ले। (हाथ उठाकर धूमते ही उसकी नज़र नवाब साहब पर पड़ती है जो गर्दन निकाले उसे देख रहे हैं, नवाब साहब बाहर निकलने की कोशिश करते

हैं और रहमत सर पर पाँव रखकर भाग जाता है)

**नवाब :** बदमाश, लुच्चा, लफंगा, अधमरा कर दिया कमबख्त ने, ठहर जा तेरी तो मैं मिट्टी पलीत कर दूँगा।  
(नीली कहकहे मारते हुए दाखिल होती है)

**नीली :** नवाब साहब पर उसकी नज़र नहीं पड़ती। आ, हा, हा, उफ् साँस चढ़ गई।

**नवाब :** (अलग) ऐसा बदला लूँगा कि ज़िंदगी भर नहीं भूलेगा।

**नीली :** (उसी तरह) आ, हा, हा, उफ् अजीब किस्सा था, बुड़ा तो बिल्कुल खबरी ही है।

**नवाब :** ये तो कोई हँसने की बात नहीं है, बंद करो ही ही ही।

**नीली :** क्यों, आप कौन होते हैं मुझे मना करने वाले?

**नवाब :** तुम्हें मुझ पर हँसने का कोई हक नहीं है।

**नीली :** आप पर?

**नवाब :** जी।

**नीली :** आपको यह खयाल कैसे आ गया कि मैं आप पर हँस रही थी।

**नवाब :** एक तो हँस रही हो, ऊपर से बातें बना रही हो।

**नीली :** माफ़ कीजिए आपको गलतफ़हमी हुई है, मैं आप पर नहीं हँस रही थी। वो तो एक किस्सा था, जो कि मैंने अभी-अभी सुना था। हो सकता है कि वो इसलिए मज़ेदार लगा हो क्योंकि मैं खुद भी उस वाकिए से ताल्लुक रखती हूँ। किस्सा एक बेटे का है जिसने किस खूबसूरती से अपने बुड़े बाप को बेवकूफ़ बनाकर रुपया निकलवाया।

**नवाब :** एक बेटे ने बाप को बेवकूफ़ बनाकर रुपया निकलवाया?

**नीली :** मेरा तो दिल चाह रहा है कि आपको भी यह किस्सा सुना दूँ। बड़ा मज़ेदार है।

**नवाब :** क्या है?

**नीली :** सुनिए और फिर आपको यह बता देने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि बहुत जल्द ही सबके सामने वो भेद खुल जाएगा।

मुझे खानाबदोश के एक कबीले ने पाल-पोस कर बड़ा किया था, हमारा काम यह होता था कि जब हम शहरों में आते हैं तो लोगों की तकदीर का हाल बताते हैं और ज्यादातर हमारी गुजर औकात इसी पर होती है। अक्सर हम कुछ हाथ की बनी हुई चीजें भी लाकर यहाँ बेच डालते हैं। खैर जब हम इस शहर में पहुँचे तो यहाँ के एक नौजवान की नज़र मुझ पर पड़ी और वो दिलोजान से मुझ पर आशिक हो गया। जहाँ मैं आऊँ मेरे पीछे घूमे। वो इस धोखे में था कि मैं भी बस उसके इशारे पर जान देने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मुझे भी अपनी खुदारी और इज्ज़त पर नाज़ है इसलिए जल्द ही उसे अपनी ग़लती का जबकि उसकी दाल नहीं गली एहसास भी हो गया। वो मेरे कबीले वालों से मिला और वे मुझे इस शर्त पर छोड़ने के लिए राजी हो गए कि उन्हें मुआवजे में कुछ रकम दी जाए, लेकिन वह नौजवान उस वक्त बिल्कुल फक्कड़ था। यह नहीं कि उसका बाप मालदार नहीं, वह बहुत ही मालदार है। लेकिन कंजूस इतना है कि अगर दूध में मक्खी भी गिर जाए तो वे उसे बगैर चूसे हुए बाहर न फेंके, ज़रा ठहरो मुझे उसका नाम भी याद था, शायद आप उसे जानते भी होंगे, पहले आप यह बताइये कि आप किसी ऐसे आदमी को इस शहर में जानते हैं जो कि पैसों के मामले में बिल्कुल मक्खीचूस हो।

**नवाब :** नहीं।

**नीली :** उसका नाम है, कुछ इसी किस्म का नाम है, नवाब वन-वन बन्ने मियाँ। हाँ नवाब बन्ने मियाँ, यही नाम है उसका, उसी मक्खीचूस बुड्ढे का। खैर तो मैं क्या कह रही थी? हाँ तो मेरा कबीला यह शहर छोड़कर जा रहा था और वो अपने साथ मुझे भी जबरदस्ती घसीटे लिए जा रहे थे—अगर वो नौजवान आज के आज ही उन्हें पैसे न चुकाता तो वो हमेशा के लिए मुझे खो देता, इस नौजवान का नौकर बहुत ही तेज़।

आदमी है उसने उसके बाप को अच्छी तरह बेवकूफ बनाया और रुपया उसकी जेब से निकलवाकर मुझे उन लोगों से छुड़वा लिया। नौकर का नाम मुझे अच्छी तरह मालूम है, उसे रहमत कहते हैं, बहुत ही—समझदार आदमी है।

**नवाब :** (अलग) पाजी बदमाश कहीं का, बिच्छू।

**नीली :** उसने उस बुड़े को बेवकूफ यूँ बनाया हो, आ, हा, हा, हँसते-हँसते पेट दुखने लगा। (हँसती जाती है, और साथ-साथ सुनाती भी जाती है) यह नौकर उस बुड़े के पास गया और उसके सामने एक कहानी गढ़ दी, उसने उसको बताया कि वो उसके बेटे के साथ बंदरगाह पर सैर करने गया हुआ था, और यह कि वहाँ पर उसकी मुलाकात एक तुर्की से हो गयी, जो इनको अपनी किश्ती में ले गया, कुछ देर के बाद किश्ती समुंदर में डाल दी गई और जब वो काफ़ी दूर निकल गए तो उस तुर्की ने नौकर को एक नाव में डलवाकर ये कहा कि अगर लड़के के बाप से पाँच सौ रुपया दो धंटे के अंदर-अंदर न लाए तो वह उस लड़के को अल्जेरिया में जाकर गुलाम बनाकर बेच देगा। अब इस बुड़े की अजीब हालत थी। एक तरफ तो बेटे की मोहब्बत तो दूसरी तरफ पैसे की वो पाँच सौ रुपये उसे बरछियों की तरह चुभ रहे थे, उसने इससे बचने के लिए कई तरीके निकाले, पहले तो धकमी दी थी कि वो अदालत जाएगा, फिर नौकर से कहा जब तक वो रुपये जमा करता है तब तक वो जाकर उसके लड़के की जगह ले ले, हालाँकि उसे छुड़ाने की नीयत बिल्कुल न थी, फिर चाबी देकर कहने लगा कि उसके पुराने कपड़े बेचकर रुपये चुका दे। नौकर ने बहुत समझाने की कोशिश की मगर वो यही कहे जा रहा था 'लेकिन वो वहाँ इस किश्ती पर मरने गया ही क्यों था?' उसने देखा कि अब तो बचना मुश्किल ही है तो वो।...लेकिन आपको? आप खामोश क्यों हैं, हँसी नहीं आ रही है आपको?

**नवाब :** इस नौजवान ने निहायत ज़लालत का सबूत दिया है। उसका बाप उसको अच्छी तरह उसकी सजा देगा। जहाँ तक उस खानाबदोश लड़की का ताल्लुक है, वो इस काबिल भी नहीं है कि शरीफों में बैठे। मैं उसे ऐसा सबक दूँगा कि उसकी तबीयत ठीक हो जाएगी और जहाँ तक इस नमकहराम नौकर रहमत का ताल्लुक है उसको तो मैं सुबह होने से पहले ही फाँसी पर चढ़ा दूँगा।

(नवाब साहब जाते हैं और हशमत दाखिल होता है)

**हशमत :** कहाँ चली गई थीं आप? आपको यह भी पता है कि अभी आप किससे बात कर रही थीं?

**नीली :** हाँ, अब पता चला, और मेरी बेवकूफी तो देखो कि मैंने उनको सारा किस्सा कह सुनाया। हाँ, मैं किसी-न-किसी को वो किस्सा सुनाने के लिए वैसे ही बेताब थी, हशमत, देखो, टकराई तो उनसे, खैर, अब क्या होता है, जो होना था सो हो चुका।

**हशमत :** आपने भी कमाल कर दिया, कोई बात पेट में रहती ही नहीं, सब कुछ उगल दिया।

**नीली :** अब उगल दिया तो उगल दिया, वैसे तो आज नहीं तो कल, यह बात उन पर ज़ाहिर हो ही जाती।

**नवाब :** (बाहर से) अबे ओ हशमत।

**हशमत :** अब आप चली जाइए, वो मुझे ढूँढ़ते ही आ रहे हैं।  
(नीली घर में चली जाती है। नवाब मुन्ने मियाँ दाखिल होते हैं)

**नवाब :** यूँ तो तुम तीनों ने मिलकर मुझे खूब बेवकूफ बनाया, तुम, रहमत और मेरे नालायक फर्जन्द ने, और तुम लोग यह समझे हुए हो कि मैं उन चकमों में आ भी जाऊँगा—ऐं।

**हशमत :** हुजूर, बाखुदा अगर रहमत ने आपको कोई चकमा दिया है तो मुझे इसके बारे में विल्कुल पता नहीं है।  
(नवाब बन्ने मियाँ दाखिल होते हैं)

**बन्ने मियाँ :** मुन्ने मियाँ, मेरा तो सत्यानाश होकर रह गया है।

- मु. मियाँ : मेरा खुद सत्यानाश होकर रह गया।
- ब. मियाँ : इस रहमत बदमाश ने मुझसे पाँच सौ रुपये ठग लिए।
- मु. मियाँ : और वही रहमत बदमाश ने मुझे दो सौ रुपये की चोट दी।
- ब. मियाँ : और यही नहीं कि वो रुपये लेकर खामोश हो जाता उसने मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया है कि कहते हुए शर्म आती है। मैं भी उसकी खाल खींचे बगैर नहीं रहूँगा।
- मु. मियाँ : आप तो सिफ़ खाल खींचेंगे, मैं तो उसमें भूसा भर दूँगा।
- ब. मियाँ : ऐसी हालत करूँगा उसकी कि लोग इससे सबक लेंगे।
- मु. मियाँ : (अलग) मुझे तो अब अपनी खाल की फिक्र हो गई है।
- ब. मियाँ : लेकिन यह होता आया है कि मुसीबत कभी खाली हाथ नहीं आती। मैं भी अपने आपको दिलासा दे रहा हूँ। खैर चलो, मेरी बेटी तो मेरे पास चली आएगी लेकिन मुझे पता चला है कि वो वहाँ से जमाना हुआ रवाना हो चुकी है, और अब मालूम हुआ है कि जिस जहाज़ में वो सफर कर रही थी, उसका कहीं पता नहीं है।
- मु. मियाँ : लेकिन मेरी समझ में एक बात नहीं आती कि आखिर आपको उसे वहाँ से छोड़ने की ज़रूरत ही क्या थी? अपने साथ क्यों न लेते आए?
- ब. मियाँ : उसकी भी एक वजह थी, मैं नहीं चाहता था कि मैंने दूसरी शादी की है उसकी खबर वक़्त से पहले आप लोगों में फैल जाय, लेकिन मैं यह क्या देख रहा हूँ।
- एहमद : (नवाब बन्ने मियाँ के कदमों पर गिर पड़ता है) हुजूर मिर्जा साहब—
- ब. मियाँ : मुझे अब नवाब बन्ने मियाँ ही कहकर पुकारो तो बेहतर है। जिस वजह से मैंने अपना नाम वहाँ बदल दिया था उसकी अब कोई ज़रूरत नहीं रही।
- एहमद : हुजूर क्या बताऊँ इस नाम के बदलने ही की वजह से हमें आपको तलाश करने में कितनी दुश्वारी का सामना करना पड़ा।

ब. मियाँ : मेरी बेटी और उसकी वालिदा कहाँ हैं?

एहमद : आपकी बेटी? हुजूर सही सलामत है। और आपसे ज्यादा दूर भी नहीं है। मैं इस बात की माफ़ी चाहता हूँ कि हम लोगों ने उसे शादी कर लेने दी। आपके न होते हुए हम लोग बिल्कुल बेआसरा हो गए थे, हुजूर।

ब. मियाँ : मेरी बेटी ने शादी कर ली?

एहमद : जी हुजूर।

ब. मियाँ : किससे?

एहमद : एक मुनीर नामी नौजवान से, जोकि किसी नवाब मुन्ने मियाँ का बेटा है।

ब. मियाँ : या खुदा।

मु. मियाँ : अजीब इत्तेफ़ाक है।

ब. मियाँ : हमें फौरन वहाँ ले चलो।

एहमद : आपको सिर्फ़ उस घर में दाखिल होने की देर है।

ब. मियाँ : तो फिर चलो। आइए मुन्ने मियाँ तशरीफ़ लाइए।  
(नवाब बन्ने मियाँ, मुन्ने मियाँ और एहमद घर में जाते हैं)

हशमत : अपनी तो अक्ल काम नहीं कर रही है।  
(रहमत दाखिल होता है)

रहमत : क्यों हशमत अपने दोस्तों का क्या हाल है? कैसी गुज़र रही है?

हशमत : मेरे पास तुम्हारे लिए दो चीजें हैं, एक तो यह कि मुनीर का मुआमला तो अब बिल्कुल राह पर आ गया है। यह नया भेद खुला है कि रजिया नवाब बन्ने मियाँ की लड़की है और किस्मत ने कुछ ऐसा खेल-खेला कि वही हुआ जो कि दोनों वालिदे बुजुर्गवार चाहते थे, दूसरी ख़बर यह है कि यह दोनों बुझे तुम्हारी खाल खींचने की फ़िक्र में हैं, खासकर नवाब बन्ने मियाँ।

रहमत : अरे उसकी परवाह मत करो। मैं इन गीद़ भभकियों में आने वाला नहीं हूँ। इस किस्म की धमकियाँ तो मैं ज़िंदगी भर

सुनता आया हूँ।

हशमत : होशियार रहो, बस मेरा तो यही कहना है अगर वो दोनों लड़के भी अपने-अपने बाप से मिल गए तो खैरियत नहीं।

रहमत : घबराओ नहीं कोई-न-कोई रास्ता निकाल लूँगा, लेकिन...

हशमत : भाग, वो आई कमबख्ती। (रहमत तेज़ कदमी से बाहर चला जाता है, नवाब बन्ने मियाँ, मुन्ने मियाँ, रज़िया, नीली, और एहमद दाखिल होते हैं)

ब. मियाँ : आवो बेटी, मेरे साथ घर चलो, अगर आज तुम्हारी माँ यहाँ होती तो मेरी खुशी पूरी हो जाती।

मु. मियाँ : लो वो आ गया मुनीर, बिल्कुल वक़्त पर आया।  
(मुनीर दाखिल होता है)

मु. मियाँ : आओ बेटे आओ, शादी की खुशी में जश्न हो जाए, शुक्र है कि...

मुनीर : नहीं अब्बाजान शादी के बारे में आपकी ज़िद बेकार है, अब तो आपको मालूम हो ही गया है कि मेरी शादी हो चुकी है और...

मु. मियाँ : हाँ बेटा, लेकिन तुम्हें नहीं मालूम कि...

मुनीर : जो कुछ मुझे जानने की ज़रूरत है, वो मैं सब जानता हूँ।

मु. मियाँ : बेटा मैं तो तुम्हें सिर्फ़ यह बता देना चाहता हूँ कि नवाब बन्ने मियाँ की लड़की।

मुनीर : आप कुछ भी कहें नवाब बन्ने मियाँ की लड़की मेरी निगाहों में कोई हकीकत नहीं रखती।

मु. मियाँ : वही तो है जो—

मुनीर : जी नहीं मैं अपने इरादे पर अटल हूँ।

हशमत : सुनिए तो।

मुनीर : नहीं चुप रहो तुम, मैं एक अल्फाज भी सुनना नहीं चाहता।

मु. मियाँ : तुम्हारी बीवी।

मुनीर : जी नहीं अब्बाजान, मैं जान दे दूँगा लेकिन रज़िया को छोड़ नहीं सकता।

(जाकर उसके बाजू में खड़ा हो जाता है)

आपकी सब कोशिश बेकार है। यही है वो, जिसके लिए मैं अपनी सारी ज़िंदगी कुर्बान कर दूँगा और किसी हालत में दूसरी शादी नहीं करूँगा।

**मु. मियाँ :** अबे लेकिन यही तो है वो, अजीब बेवकूफ से पाला पड़ा है, उसी पुरानी लकीर को पीटे जा रहा है।

**रज़िया :** (नीली की तरफ इशारा करते हुए) ओ अब्बा जान, इनको भी मेरे साथ रहने दीजिए ना देख लीजिएगा कुछ ही दिनों में आप उनसे भी बेटी की तरह प्यार करने लगेंगे।

**ब. मियाँ :** यह तुमने कैसे समझ लिया कि मैं एक ऐसी लड़की को अपने घर में घुसने दूँगा जिसने कि तुम्हारे भाई को बहका दिया है। और जिसने कुछ ही देर पहले मेरे मुँह पर मेरी बुराई की है।

**नीली :** मैं अपनी इस ग़लती पर नादिम हूँ। मुझे अगर यह पता होता कि आप कौन हैं तो मैं यह बात कभी न कहती। मैं तो सिर्फ आपको इतना ही जानती थी जितना कि मैंने आपके बारे में सुना था।

**ब. मियाँ :** क्या मतलब?

**रज़िया :** अब्बाजान आप यकीन मानिए भाईजान की मोहब्बत इनके लिए बिल्कुल पाक है, और इनकी सीरत के बारे में मुझे भी पूरा भरोसा है।

**ब. मियाँ :** लेकिन बेटी यह कैसे हो सकता है। तुम यह चाहती हो कि मेरा बेटा एक ख़ानाबदोश लड़की से शादी कर ले, जिसके न माँ, न बाप का पता, न खानदान का।

(अफ़ज़ल दाखिल होता है)

**अफ़ज़ल :** अब्बा मियाँ अब आपको इस बारे में बिल्कुल परेशान नहीं होना चाहिए कि मैं एक गुमनाम ख़ानाबदोश लड़की से शादी कर रहा हूँ। इन ख़ानाबदोशों ने मुझे अभी बताया है कि नीली इसी शहर में पैदा हुई थी, और एक बहुत ही शरीफ और

आला घराने से ताल्लुक रखती है। इसका असली नाम नीलोफ़र है जो वो सिफ़ चार वर्ष की थी, तो ख़ानाबदोश उसे चुराकर ले गए थे। उन्होंने मुझे उसका वह कंगन भी दिया है ताकि उसके वालिदैन का पता लगाने में आसानी हो।

मु. मियाँ : देखूँ तो कंगन, मेरी बेटी भी इस उम्र में खो गई थी।

ब. मियाँ : आपकी बेटी?

मु. मियाँ : हाँ, यह तो वही है। और शक्ति-सूरत में भी काफ़ी मिलती है, मुझे कोई शक नहीं रहा बेटी।

रज़िया : शुक्र है खुदाया। कहाँ से कहाँ मिलाता है तू।  
(मस्तू दाखिल होता है)

मस्तू : हुजूर एक पूरा वाकया पेश आया है।

ब. मियाँ : क्यों, क्या हुआ?

मस्तू : बेचारा रहमत।

ब. मियाँ : उस बिच्छू की तो मैं खाल उधेड़ दूँगा।

हशमत : हुजूर, अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं रही। कुछ देर पहले वह एक दीवार के पास से गुज़र रहा था कि छत पर से एक हथौड़ा उसके सर पर आ गिरा। सर फट कर रह गया है। गुद्दी तक दिखाई देने लगी। मालूम होता है ज्यादा देर नहीं बचेगा। उसने लोगों की मिन्नत की है कि उसे उठाकर ले आएँ ताकि मरने से पहले, अपनी खताओं की माफ़ी माँग ले।

मुनीर : कहाँ है वह इस वक़्त?

हशमत : ठहरो मैं लाता हूँ।

(हशमत रहमत को लेकर आता है)

रहमत : ओ...ओ...मैं अब ज्यादा देर ज़िंदा नहीं रहूँगा। ओ...ओ...मरने से पहले, मैं अपनी खताओं की माफ़ी माँगने आया हूँ। इसके बगैर मेरी जान नहीं निकलेगी। ओ...ओ...हजरत, मुझे उम्मीद है कि दम तोड़ने से पहले आप मेरी खतायें माफ़ कर देंगे। खास कर, नवाब मुन्ने मियाँ और नवाब बन्ने मियाँ। ओ...ओ...।

मु. मियाँ : बहुत अच्छा, मैंने तुम्हें माफ़ किया, इतमीनान से मरो।

रहमत : (बन्ने से) सबसे बड़ा कुसूर तो मैंने आपके साथ किया है।  
खास करके पीटा है।

ब. मियाँ : भूल जाओ उसे। मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ।

रहमत : मैं वाकई ज्यादती कर गया था कि आपको पीटने पर....

ब. मियाँ : कोई बात नहीं।

रहमत : मेरा दिल ग़म से फटा जा रहा है, जब भी यह ख्याल आता है कि ऐसी पिटाई...

ब. मियाँ : चुप रहो जी।

रहमत : पता नहीं वह कौन-सी मनहूस घड़ी थी कि मैं आपको पीटने पर...

ब. मियाँ : मैं चाहता हूँ चुप रहो। अब उसे भूल जाओ।

रहमत : ओ...ओ...आप कितने सख़ी दिल हैं। क्या आप सचमुच मेरे इस पीटने पर...

ब. मियाँ : हाँ, हाँ, अब जो गुज़र गया सो गुज़र गया। मैं तुम्हें सच्चे दिल से माफ़ करता हूँ। अब मुझे तुमसे कोई शिकायत बाक़ी नहीं रही।

रहमत : आह हुजूर, आपकी यह बात सुनते ही मेरी तबीयत बेहतर होने लगी।

ब. मियाँ : बेहतर होने लगी, लेकिन मैं तुम्हें एक ही शर्त पर माफ़ करता हूँ, और वह यह कि तुम मर जाओ।

रहमत : क्या कहा हुजूर?

ब. मियाँ : अगर तुम जिंदा बच गए तो मैं अपने अलफाज़ वापस ले लूँगा।

रहमत : ओ-ओ। मेरी हालत फिर ख़राब होने लगी।

मु. मियाँ : बन्ने मियाँ, इस खुशी के मौके पर हम सब की यही तमन्ना है कि आप इसे बग़ेर किसी शर्त के माफ़ कर दें।

ब. मियाँ : ख़ैर, बहुत अच्छा।

मु. मियाँ : आइये तो फिर इस खुशी के मौके पर सब एक ही साथ मिल कर खाना-वाना खाएँ।

रहमत : और मुझे भी यहाँ से उठवाकर दस्तरखान पर रखवा दीजिए,  
ताकि मैं वहाँ बैठकर इतमीनान से अपनी मौत का इंतजार  
करूँ।

सूत्रधार : ओ मेहरबान अब्बाजी  
ओ दयावंत माता जी  
मेहरबानियों और ममता से  
बिगड़ न जाएँ बच्चे  
और फिर बिच्छू की दुम बनकर  
अकड़ ना जाएँ बच्चे  
ओ मेहरबान अब्बाजी  
ओ दयावंत माता जी।

006969

□ □ □





### मौलियर ( 1622-1673 )

फ्रांसीसी नाटककार मौलियर की गणना विश्व के महानतम नाटककारों में होती है। उन्होंने अपने हास्य और व्यंग्य से भरपूर नाटकों के जरिये तत्कालीन सामाजिक विद्रूपताओं पर इतना तीखा प्रहार किया, जिसे सहन करना न तो धर्म-सत्ता के केंद्र चर्च के लिए संभव था, न तत्कालीन शासक वर्ग के लिए आसान। इसके बावजूद मौलियर ने अपनी दिशा नहीं बदली और आजीवन एक सचेत रंगकर्मी की भूमिका में खुद को समाज के सामने रखा। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं— द पेशियस रेडीक्यूलस, द बुर्जुआ जेंटलमैन, द इमेजनरी इनवैलिड, स्कूल फॉर बाइब्ज, तारतूफ़, इमप्रौम्पट डी वरसेल्स, डॉन ज्वान आदि।